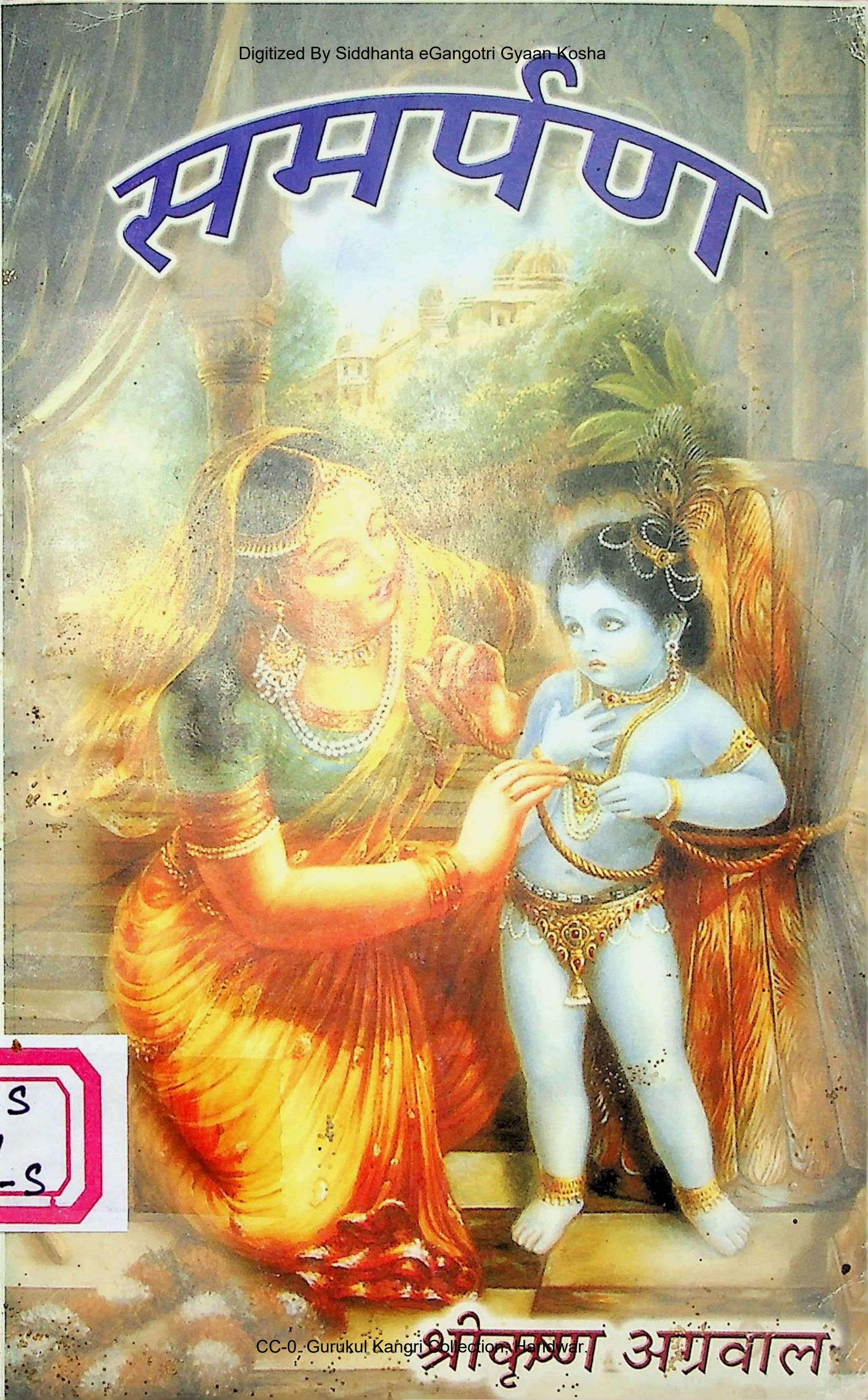
समर्पण



श्रीकृष्ण अग्रवाल

एक साधक कवि : *श्री कृष्ण अग्रवाल*

– एस.एन.मिश्र

योग मनुष्य के जीवन में नदी - नाव संयोग प्रकार में आता है।यह सिलसिला जन्म जन्मातर के चित्त रूपी संसारिक बंधन को नकारते हुए, उस बाढ़ में बहकर बचते हुए आता है अपने सतचित्त आनंद स्वरूप की परिधि में कबीरदास जी ने इसी अवस्था में कहा था, माया महा ठगिनी हम जानी, चित्त उसी सत् आनंद में डुबा रहे,यह प्रयत्न करता है यहाँ साधक। साधनाएँ दो प्रकार की होती हैं, एक वह जो जन्म जन्मात्तरों से भीतर चल रही है, एक वह जो अब से अर्थात्त साधक के वर्तमान में उस के द्वारा शुरू हो रही है। श्री कृष्ण अग्रवाल दोवम प्रकार के साधक नहीं हैं, अपितु द्वितीय जीवन के साक्षी हैं, अर्थात अपना ईश्वर-प्रदत्त यह जीवन वह प्रभु चरणों में समर्पण कर देना चाहतें हैं। जितना अंतराल उन्हे मिला, मथुरा और वृन्दावन में साधनाएँ कीं, कृष्ण की खोज उनके जीवन का उदेश्य रही, किन्तु भारतीय मिथकों और पौराणिक सन्दर्भो में उन्होने छोटी-छोटी प्रर्थनाओं को भी लिखा है- "सिया राम मय सब जग जानी"वाली स्थिति की परिक्रमा में भी वह रहे हैं।

श्री कृष्ण अग्रवाल सूर के इस कथन की अर्थवत्ता को भी जानते हैं कि ऊधो! जीवन की गति न्यारी, असुवन जल सींचत निश दिन, पियत जनम भिखारी।

जन्म मिला है और दर्पन की तरह जिसमें हम अनेक जन्मों की संपन्न सारस्वत साधनाओं को कृष्ण अग्रवाल की कविताओं में देख रहे हैं। यद्यपि साहित्यिक तौर पर यह भक्तिकाल की कविताएँ हैं और भक्तिकाल इनकी शब्दावली में आकर बार-बार हमारा ध्यान खींचता है कि अपने साहित्य के चिरकालीन सत्य को पहचानें। श्री कृष्ण अग्रवाल जी ने कहा है कि - " यह कलिकाल बुधि भ्रम कारक, सर्व क्रिया विष बिषम मयी "

हम सर्व क्रियाओं में विषय बटोर रहे हैं किन्तु सच तो यह है कि-

"नाथ न ध्याऊँ, दोष प्रभु देऊँ, कर्म अहेर विविध पुनि रोऊँ "

तुलसी की भाषा श्री कृष्ण अग्रवाल की आत्माभिव्यक्ति की भाषा रही है, यधपि आप अवध के नही हैं, मूलत: भोपाल के हैं किन्तु ऐसी कविताओं में भाषा की वह थाती भी अपनी पूरी ताकत के साथ मिल जाती है, जो खो सी गयी है। यह राग से अपनी विराग की कविताएँ भी नहीं है, यह विराग की स्थित प्रज्ञ चेतना में संपन्न साधना की कविताएँ हैं। इस भक्त कवि ने जिन जिन ईश्वरीय अवतारों के आस्था के पंखों को अपने शब्दों मे खोला है, वह अद्‌भुत और अवलौकिक है। कहीं कहीं दोहे छपप्य और सोरठे की लय देखने लायक है कि - रामचरित मानस की परंपरा में एक कथा प्रसंग का परिदुश्य अद्‌भुत लगता है कि - यहाँ पर लगता है छंद के मुताबिक मूल शब्दों को हर्स्व और दीर्घ के नियमों से कवि ने कहीं मुक्त भी रखा है।

पुष्पक मांगी सकल समुदाई

सीता सहित लखन दोऊ भाई

सरजु दर्शन हद्य अनन्दा

भय प्रसन्न सकल सुख कन्दा

आराधना श्रीराम जी की, यह एक लम्बी कविता है। इस में साधक श्रीकृष्ण अग्रवाल ने अपनी भक्ति की धारा में बहते जाने के सच को जाना है कि "राम ब्रह्म है किन्तु लीला भूमिका है" और लीला के प्रभु दर्शनों को अपने शब्दों में करते जाना श्रीकृष्ण अग्रवाल की आस्था रूपी जीवन का एक महान लक्ष्य रहा है, जिसे नियति हम इस लिए नहीं कह सकते कि स्वयं इस भक्त कवि के द्वारा हम कहें तो आप भी इस भक्तियाव के समन्द्र में उतर जाएगें कि -

"दीन बन्धु हरि रूप व्याप्त जग, भगत बसल जय-जयति गुसाई"

"मीरा के श्याम और राम के हनुमान" की स्थिति उक्त दोहे में अभिव्यक्त हुई हैं कि कवि की यह सम्पुट शब्दावली में सम्पूर्ण सार तत्व उभरा है। श्रीराम के भक्ति सागर में उन की छबियों को निरखते जाना हमें परमानंद में डुबो देता है कि-

जय राम शोभा अमित छबि
निर्मल सुमश यश धाम जे
जयमत्ति सुमति कीरति विमल
तन श्याम राम नमामह
जय राम ब्रह्म अनुप रूप
सु व्याप्त अग जग नम मही
निर्गुण अनादी अरूप रूप
सजाई जन आरत हरी

इस कथा के उपसंहार पर इस तत्वज्ञानी कवि ने माना है कि -

कथा राम की आदि कवि
श्री वाल्मीकी सुजान
लिखे चरित्त जस विमल अति
गावहिं वेद पुरान

तुलसीदास जी ने भी रामचरित्त मानस के प्रारंभ में ही वाल्मीकी जी की आराधना की है कि -

"वाल्मीकी भय ब्रह्म समाना
उल्टा नाम जपा मुनि ज्ञाना"

और भक्तकवि श्रीकृष्ण अग्रवाल ने श्री राम अराधना कविता के संपन्न होने पर वाल्मीकी की प्रार्थना की है। इस से लगता है कि यह दो युगों का बोध है जो नैरंतर भक्त के भाव में शब्दों के बाँध को बाध रहा है कि कहीं कभी कुछ प्रभु स्मरण हो आता है तो कहीं कभी कुछ स्मरण-प्रसंग जीवित हो जाता है, है तो झांकी श्रीराम की ही और **रामावतार** की विभिन्न धारणाओं और उनके विषय में चरित्त लेखन की विभिन्नताओं का उल्लेख करें तो यह बात सामने आती है कि तेलुगु में यह प्राचीन परंपरा है कि रामकथा लेखन अब भी चलता है।

महाकवि विश्वनाथ सत्यनारायण की कल्पवृक्ष रामायण इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। हिन्दी में वाल्मीकी रामायण, तुलसी कृत रामचरित्त मानस, शिव व्रत रामायण, राधेश्माम रामायण और विज्ञान रामायण आदि हैं, इन्हीं की परंपरा में यह एक राम कथा खण्ड -श्रीकृष्ण अग्रवाल की हमें देन है कि इस में उन्होने परंपरा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भक्ति की धारा के अर्थ में दोहराया है। यहाँ व्यक्ति से समस्त सृष्टि तक की भक्ति भावना बह रही है। यहाँ पर हम पाते हैं कि श्रीकृष्ण अग्रवाल का ह्दय स्वयं रामायण हो चुका है।

कृष्ण भारतीय मिथक के एक ऐसे अवतार हैं, जिन की नाम गूँज युगात्तर है। प्रति सांस जीवन की समिधा है तो साधक उसे समय-यज्ञ कुंड में समर्पित करता जाता है। सूरदास ने कृष्ण की बाललीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है, जयदेव ने गीतगोविन्द लिखकर

कृष्ण को भजा है और कृष्ण का वाहन गिद्ध है, जो आकाश में अपनी वाणी को गुँजाता दोपहरी को चरता है, यह भी साधना की एक जीव

प्रक्रिया है। कृष्ण अंतरंग है, उत्तर है और वही आत्मदर्शन की प्रक्रिया में आत्मज्ञान के सूचक भी है। "**गीता**" उन के उपदेश की वाणी है। भारतीय गीति काव्य की आत्मा कृष्णमय है। अत: इस महायोगेश्वर के रूपो के दर्शन भक्त कवियों को प्राप्त हुए हैं। सूर उस के दीवाने हुए तो तुलसी राम के- किन्तु ब्रह्म ज्ञान की आंकाक्षा रखने वाले श्रीकृष्ण अग्रवाल भक्ति के केन्द्र में इन्हें रखते हैं। इन के सवय्यों में कृष्ण की आराधना अपनी पूरी आत्म चेतना के साथ उपस्थित है -

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय

जैसी भावना इन कविताओं में भरी पड़ी है विशेष कर सवैयों में इससे पहले गीत का एक चरण देखें-

आजा राजा कृष्ण कन्हैया, ढुमुक-ढुमुक फिर आजा रे
आजा रसिया रस बरसाजा मन की जलन बुझा जा रे
भटी मथनिया दधि की साटी मोहन खाय लुटा जा रे
फीको पड़ गयो सगरो गोरस आजा रस बरसा जा रे

☸ ☸ ☸

नंद के लाल जू आप दयानिधि त्रिभुवन नाथ हो प्यारे कन्हाई
जसोमति के सुख के हित बाल केलि बहु करहु गोसाई
प्रेम से भोग धरूँ अति सुन्दर ध्यान से नाथ बहुत रसवारी
गोरस की बहु छाक घटी प्रभु भोग लगाइके जगहितकारी

श्रीकृष्ण अग्रवाल की इन यौगिक कविताओं का अपना एक सूत्र है। गन्तव्य है और वह है प्रेममार्ग की भक्ति, ख़ुद में ख़ुद का एक

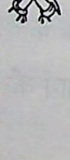
सफ़र, यह वैसा ही है जैसे ऋगवेद से साराबोर उमर खय्याम का दौरे बेखुदी रहा।

शिव और शक्ति के अर्थात्तर इन की कविताओं में कृष्ण और राधा तथा राम और सीता के रूप में बसते हैं। ऐसी कविताएँ जब योग में चार अंगुल सांसे कम चलती है तो बह बह कर आती हैं। यह एक गूढ़ अर्थ हैं, जिसे समझना संभव नहीं। एक कविता में इन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन सार लिखा है। इस में प्रतीक बिम्ब और अलंकार भी है, एक कविता का शीर्षक **आत्म-दीप** है, पाठक इस कविता की रोशनी में तमाम कविताओं के विराठ अर्थ को समझ पायेंगे। ऋग्वेद में कहा भी गया है कि -

यं कामयते तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं ऋषिं तं सुमेधाम्

अर्थात मैं जिसे चाहती हूँ, उसे शूर बनाती हूँ, सृष्टा बनाती हूँ, द्रष्टा बनाती हूँ, यह कहती है वाणी। अत: श्रीकृष्ण अग्रवाल की यह समस्त कविताएँ इस दौर को भक्तिकाल की याद ही नहीं दिलाती, न ही अर्थ धर्म काम मोक्ष का पारंपरिक सबक देती है, बल्कि कर्म के योग में प्रेरणा भी देती है। इस अक्षर-योगी की अथाह भक्ति को इनके शब्दों में जाना जा सकता है। इन कविताओं को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए स्वयं में साधुवाद की प्रतिती हो रही है।

-एस.एन.मिश्र



संसार: सार और ब्रह्म सत्य

यह संसार एक सनातन वृक्ष है,
वृक्ष का आश्रय हैं- एक प्रकृति
इसके दो फल हैं- सुख एवं दुःख
तीन जड़े हैं- सत्व, रज और तम
चार रस हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष
इसके जानने के पाँच प्रकार हैं -
कान, त्वचा, नेत्र, रसना और नासिका
इसके छ: स्वाभाव हैं - पैदा होना, बड़ना,बदलना,
घटना और नष्ट हो जाना
इस वृक्ष की छाल हैं, सात धातुओं की -
रस, रुधिर, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र
आठ शाखायें है, पाँच महाभूत, मन, बुद्धि और अहंकार
इसमें मुख आदि नवों द्वार खोडर हैं- प्राण, अपान, न्यान,
उदान, सदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और यनंजय, ये
दस प्राण ही इसके दस पत्ते हैं।
इस संसार रूप वृक्ष के दो पक्षी हैं जीव और इश्वर
ब्रह्म और जीव इसमें घोंसला बनाकर रहते हैं,
ब्रह्म साक्षी है और जीव फल का भोक्ता है।

इस प्रसंग का वर्णन आगे भी उल्लेखनीय है-- ।।श्रीमद् भागवत् दशम स्वंय के द्वितीय अध्याय से साभार।।

समर्पण

शुभ मंगल दायक प्रभु विघ्न हरण गजराज।
कृपा कीजिए दास पर बहे सरस रस धार।।
बहे सरस रस धार प्रभु के चरित अनुपम।
गाऊँ शुभमति पाऊँ सरस रस रसिक रहे मन।।
कहे कृष्ण को दास कृपा रहे हरि की मो पर।
शारद माता आई बिराजे उर सिंहासन पर।।
हे माता करूणामयी ज्ञान गिरा गोतीत।
जगत्प्रभु के रसचरित भरो हृदय सुख प्रीत।।
भरो हृदय सुख प्रीति कंठ में आई बिराजो।
प्रभु की नाम रसामृत सरिता हिय सरसा दो।।
जासे हो भवनाश सुमति हिय सदा सुहाई।
भक्ति ज्ञान दर्शाओ नाम की ज्योति जगाई।।
वाणी में अमृत रहे सतत नाम को गान।
मन मोहे शुभ मूरति कुंज बिहारी श्याम।।
सतत हृदय चिन्तन रहे सब इन्द्रिय प्रभु काज।
तन मन की सुधि ना रहे बिसरे जग जन्जाल।।
बिसरे जग जन्जाल जगत में श्याम छबी की।
करूँ सतत दर्शन सरसे हिय सिन्धु अमी की ।।

सदा हृदय में बहे कृष्ण रसामृत धारा। जाके अमित प्रभाव रहे सुख हर्ष अपारा।।
माता दो वरदान प्रेम को अमृत बरसे। जुगलनाथ सरकार के लिए रस हिय में सरसे।।
वृथा शास्त्र बहु विज्ञता और बुद्धि को वाद। जामे तर्क वितर्क हैं वृथा ग्राम्य बहुभाष।।

वृथा ग्राम्य बहु भाज्य , हृदय नहिं छबी सुहाई।

वाणी जीवन हीन सतत हरि नाम ना गाई।।
सर्व श्रुति को सार समझ मूरख अनुरागी।
हृदय सृष्टि को सार प्रतिष्ठित राधारानी।।
धार सुभग सिंगार अमित यदुनाथ प्रिया के।
मन सिंहासन देख जुगल छबि प्राण जगत के।।
कर कीर्तन गुण गान नहीं अभिलाषा छूटे।
राग दिनहि दिन बढे मत्त सो नाचे झूमे।।
झूम उठे संसार हृदय वीणा झंकृति से।
अमृत रस मधु सिन्धु तरंगित हो जीवन से।।
जहँ तहँ रस छलकाय बन्धु सुत भरहिं पिलावें।
सखा सहृद परिवार भक्ति प्रसाद चखावें।।
तीरथ जो मन भाय नाम गंगा की धारा।
भरि भरि गोता खाय सहित परिवार सदारा।।
करें तीर्थ में दान जासु गुण वेद बखानहिं।
सुमति विप्र द्विज देव नमन चैली सन्मानहिं।।
जुगल चरण छबि गन्ध सकल द्विज चरण मनाईं।
चरित भेद रस गाईं सुमति बीड़ा बनवाईं।।
गदगद कंठ सुकीरति नाम वस्त्र पहँनाई।
ध्यान रूप छबि माधुरी कथा शरीर सुहाई।।
स्वेद कणिकी मणि विमल कंचन कम्प धराई।
कथा रसामृत सिन्धु सरस द्विज हृदय सुहाई।।

या विधि करि सब यत्न दिनहिं दिन प्रेम बढ़ावें।
मानुष तनु यो रतन भक्ति कंचनहिं जड़ावे।।
तासे भूषित हृदय करि सेवा वसन सिवाय।
टाँके गोटा प्रेम के तन भूषित छबि छाय।।

तन भूषित छबि छाय नाम चन्दन शिर राजे।
कर्ण फूल बहु माल प्रभू गुण कथा सुहावे।।
या विधि सब श्रृंगार करे रस पान अमी को।
कथा चरित्र अपार हृदय रस सिन्धु मही को।।

प्रभु लीला चर्चा विविध अमित कथा विस्तार।
श्रोता वक्ता हरष अति बाढ़े मोद अपार।।
कहे कृष्ण को दास हृदय सुख सदा विलासे।
राधा नागर की छबि राजे तो सुख साजे।।

करे क्रिया जो जगकी प्रभु को ध्येय बनाके।
करम न बाके बने सकल सुख अविरल पावे।।
सदा रहे मन ध्यान न तन की बाधा बाधे।
जुगल चरण युग कमल भगत के हृदय बिराजे।।

पावे मन विश्राम पाप को लेस नसावे।
सबको सुहृद सरल चित होवे सन्मति पावे।।
मन न पाय विश्राम कर्म गत संस्कार से।
रहे विकल अविराम जरे संसार ताप से।।
ताप अगिनि बुझ जाय नाम शीतल जल सेवे।
पाप ताप न रहे नाम जो अविराल लेवे।।

प्रेम पयोधि कृपानिधि सकल सखा पितृ मात।
आतुर हो प्रभु नाम ले सबहिं नवावें माथ।।
सबहिं नवावें माथ सभी में जगन्नाथ को।
रहे सरूप निहार तुरत अभिलाषा छूटे।
काम क्रोध के वेग को तुरत होय निस्तार।।
कर्म क्रिया मन वचन से सूरत तजे मन गाय।
कहे कृष्ण को दास जनक जननी जन जन के।।
सदा दया के धाम काज साधें निज जन के।
वाणी से गुनगान हृदय में मुरति प्यारी।।
कान रसामृत पान आँख प्रभु रूप निहारी।
करें नासिका घ्राण सदा तुलसी सौरभ की।।
अगर धूप जो फूल रहे सेवा में प्रभु की।
प्रभु के मन्दिर में सदा कर से होवे काम।।
चरण तीर्थ सेवी रहें बुद्धि रहे निष्काम।
बुद्धि रहे निष्काम सदा चिन्तन सुख साजे।।
क्रोध मोह अभिमान मिटे बंधन कट जावे।
कहे कृष्ण को दास नाथ की सन्निध्य पावे।।
माथ नवे श्री विग्रह आगे तो भव जावे।
क्रिया कर्म मति कालगति जगती को भ्रमजाल।।
जाकी इच्छा से चले वही नाथ प्रतिपाल ।
वही नाथ प्रतिपाल जगत जीवनं को कर्ता।।
जग को पालन करे जगत को जो है हर्ता।

कहे कृष्ण को दास प्रभू को माथ नवाके।
दीजो भक्ति-विमल-वर स्वामी भव-भय भागे।।
इन्द्र अगिनि यम नैकृति वरुण वायु दिग्पाल।
धनपति ईश दयानिधि अवचीपति प्रतिपाल।।

ब्रह्म सनातन ऊर्ध्व-पति हे विष्णो जगपाल।
कृष्णदास को भक्ति वर दो प्रभु चरित रसाल।।
दो प्रभु चरित रसाल भाव भर दो प्रभु प्यारा।
जासे गीत रसाल चरित रस बहे अपारा।।

कहे नाथ को दास भाव में प्रभु की गाथा।
होवे गुण रस प्रेम प्रवाहित निर्मल धारा।।
जासे भव सब करें पाप हों सर्व प्रवाहित।
और नाथ को साथ रहे वाणी में प्रतिपल।।

नाम रसामृत सिंधु में उठे तरंग अपार।
जामें गोता खाय के तन मन आभा आय।।
तन-मन आभा आय साथ में प्रभु की वाणी।
सदा सरस आय हृदय प्रभु छबी सुहानी।।
तन मन प्रभु छबी छाय गीत रस आय हृदय में।
वाणी जिनको गाय-पाय सुर सरस अमी को।।
कहे कृष्ण को दास नाथ की कृपा सभी पे।
रहे चित्त में ध्यान सदा मति जुगल छबी पे।।

इन्द्र मणि श्रुति

जुगल छबी के ध्यान से जीव सकल सुख पाय।
जीवन-धन प्रभु दास पे सहज कृपा बरसाय।।
सहज कृपा बरसाय बसे साधक के मन में।
जोग क्रिया से कठिन भक्ति से सहजहि बस में।।
कहे कृष्ण को दास नाथ को शुभ जस गाई।
अविचल रूप स्वरूप धाम शुभ निर्मल पाई।।

एक प्रभु निर्मल विमल करूणा को अगार।
देख जगत की त्रास को भयो अलख साकार।।
भयो अलख साकार दीन जन के भय टारी।
लीला करि नित नवल सदा मुद मंगलकारी।।
कहे कृष्ण को दास प्रभू की महिमा न्यारी।
प्रभु की कीरति गाय दास के प्रभु भयहारी।।

श्री राधा को नाम ले जो चाहे कल्याण।
जग जननी करूणामयी तुरत करे विश्राम।।
तुरत करे विश्राम प्रिया जो जग स्वामी की।
जासे जग की क्रिया चले अविरल धारा सी।।
कहे कृष्ण को दास क्रिया बन कर्म अधूरो।
कर वृन्दावन ध्यान प्रिया संग प्रीतम जू को।।

मात पिता स्वामी सखा सकल विश्व आधार।
सत चेतन आनन्द विमल युगल प्रिया सरकार।।

युगल प्रिया सरकार जनक जन जीवन दाता।
अखिल लोक विश्राम सुमति कीरति श्री दाता।।
कहे कृष्ण को दास रूप सरितामृत रस को।
मधुप बने सो पान करे रस पान अमी को।।

आत्माधार अनन्त है सकल विश्व को सार।
जाकी अनुपम शक्ति से चले जगत व्यवहार।।
चले जगत व्यवहार पराक्रम जग में छावे।
अविचल शक्ति अनूप रूप जो हियें विराजें।।
कहे कृष्ण को दास वृथा सब कर्म जगत को।
नहीं लियो जो साथ सखा जो जीव जगत को।।

झूठे बंधन त्याग दे कर ले प्रभु को ध्यान।
मन भटके भ्रम छोड़ दे धरी रहेगी आन।।
धरी रहेगी आन जान नश्वर जग मन में।
जगती तो हे भास सत्य व्यापक कण कण में।।
कहे कृष्ण को दास करे सेवा क्यों तन की।
तन नश्वर हे अमर आत्मा ज्योति सकल की।।

पाप आप को खात है समझ धरम की बात।
आप आपको देख ले पाप करो ना जाय।।
पाप करो न जाय धरम की महिमा भारी।
ईश्वर को तो समझ धार मूरति उर प्यारी।।
कहे कृष्ण को दास जगत ठकुराई फीकी।
कृष्ण कृपा को जान और सब माया रीती।।

सदा काल के गाल में मूढ़ जगत को जान।
कर चिन्तन जगनाथ को छोड़ वृथा अभिमान।।
छोड़ वृथा अभिमान प्रभु की लीला न्यारी।
गावे तो नई पाय ठौर अविचल अविकारी।।
कहे कृष्ण को दास प्रभु को नाम सुहावे।
भव के सारे फन्द करें निज रूप लखावे ।।

बुरो भलो या जगत में जो भासे भ्रमजाल।
जो भ्रम को निर्मल करे सारी सृष्टि समान।।
सारी सृष्टि समान सकल जग रूप प्रभु को।
व्यापक रूप अरूप ब्रह्म सुख रूप विभु को।।
कहे कृष्ण को दास प्रभु घट घट को वासी।
जग के जीव सरूप ब्रह्म के जो अविनासी।।

को छोटो को बड़ो है सबको सर्जन हार।
हियें बिराजे सभी के जग को माई बाप।
जग को माई बाप सभी को हियें लागावे।
और भेद जो करे नाथ नहिं ताहि सिरावे।।
कहे कृष्ण को दास नाथ की नीति प्यारी।
सब में सम जो रहे प्रभु को सुत बड़ भारी।।
दीन बने सेवा करे दीनदयाल मनाय।
मन मंदिर मूरति धरे करे जगत व्यवहार।।

करे जगत व्यवहार दीन को रहे सहाई।
दीनों को जो नाथ रहे संग सदा सहाई।।
कहे कृष्ण को दास तजे मर्यादा रीती।
जगत बड़ाई तजे नाथ की बामें प्रीती।।

जग नश्वर जग जाल की झूठी वैभव आन।
प्रभु को वैभव सत्य है और भास सब जान।।
और भास सब जान व्यर्थ चतुराई कोरी।
छोड़ चतुर व्यवहार चतुर सो हिय पर खोली।।
कहे कृष्ण को दास हियें में बास प्रभू को।
जुगल चरण को मान नहीं जाएगो रूखो।।

दोष पराए क्या लखे अपने दोष निहार।
जो मन को निर्मल करे नहीं दोष दर्शाय।।
नहीं दोष दर्शाय हियों दर्पण को जेसो।
जौसी रही प्रतीति वस्तु दर्शावे वैसो।।
कहे कृष्ण को दास हृदय में राधा प्यारी।
रहें जुगल सरकार दिखें चहुँ और मुरारी।।

सेवा की विधि सीख ले छोड़ कपट अभिमान।
जुगल नाथ पद युग कमल जीव जगत में जान।।
जीव जगत में जान सबहिं को माथ नवावे।
कर स्तुति सम्मान हृदय नहिं प्रीति समावे।।

कहे कृष्ण को दास करे सेवा तन मन से।
आठों पहर सुहाय जीभ पे नाम जतन से।।

सदा कृतारथ सो रहे आपन दीन बनाय।
जग वैभव जो प्रभु दियो सभी प्रभु को ध्याय।।
सभी प्रभु को ध्याय नहीं अपनो कछु माने।
प्रभु मंदिर सेवा करे झाड़ पोंछ सुख पाये।।
कहे कृष्ण को दास करे जो सेवा प्रभु की।
तिन्ह के चरण कमल धरि मस्तक ले पग धूरी।।



कृष्ण अग्रवाल के सवैये

फूलो फिरूँ बहुमान करूँ नहिं ध्यान धरूँ पुनि पुनि इतराऊँ ।
सेवा को ढ़ोग रचाई विविध विधि पूजा दिखाई बहुत हरबाऊँ।।
हों विधि हीन न जोग सनेह के निज मन कलुष कहा बतलाऊँ।
बात बढ़ेन सुनी हम नाथ दयानिधि भाव कुभाव न मानहुँ।।

ध्यान न ज्ञान न अर्चन की विधि नाहिं बने कछु प्रेम सगाई।
हों तो गँवार रहूँ अति व्याकुल शास्त्र की रीति न जानूँ गुसाई।।
मन्त्र न तन्त्र न शौच है नाथ जू कोरो हूँ नाथ विपथ पथ गामी।
सेवा करो स्वीकार कृपा करि नाथ के द्वार को चाकर जानी।।

बात न ऐसी करो मनमोहन या मन के तुम ठकुराई।
खात चकोर अगनि जग जानत ताती बहुत नहिं कछु मधुराई।।
नभ मंडल घनश्याम निहारि मयूर नचे तन भान भुलाई।
मीत समीप रहे घनश्याम तो अचरज का हम देह भुलाई।।

नन्द के लाल जू आप दयानिधि त्रिभुवन नाथ हो प्यारे कन्हाई।
मात जसोमति के सुख के हित बाल केलि बहु करहु गोसाई।।
प्रेम से भोग धरूँ अति सुन्दर ध्यान से नाथ बहुत रसवारी।
गोरस की बहु छाक धरी प्रभु भोग लगाइये जग हितकारी।।

आइए नाथ बिराजिये नेह बढ़ाइके स्वामी सखा हितकारी।
साथ में राधा सखी वृजचन्द जू आवहु सब मिलि वृज नरनारी।।
रूप के धाम जुगल सरकार लगाइये भोग चराचर स्वामी।
व्यंजन बहुरंग भोग धरे प्रभु ध्यान से भोग की जुगति बनाई।।

आओ दयानिधि बैठो सुहासन भोजन पान की थारी सुहाई।
दीन के बन्धु दयालु कृपानिधि मोद मुदित सुख साजहु स्वामी।।
पालक हो सबही के कन्हाई चराचर रूप सकल जग स्वामी।
दीजिये नाथ सतत चिंतन सुख भक्ति रसाल सदा उर माँही।।

श्याम साथ श्यामा के जगन्नाथ कंचन की थारी भरी व्यंजन सुहाई है।
केसरिया बाटी खोवा से बनाई नाथ ताजी बासुन्धी स्वाद अनुपम रसाई है।।
खीर के कटोरा भरे किसमिस बादाम डारे छाक के सुहनी मन भाइन मुरारी है।
दास है गरीब नाथ कोटिक ब्रह्माण पति नाथ हो जगती के नारद जस गाई है।।

दीनदयाल कृपाल रमापति जेबहुनाथ सनेह दिखावहु।
कन्चन थार सुस्वादु मनोहर व्यंजन बहुरूची भोग लगावहु।।
पान को बीड़ा बनायो दयानिधि लौंग इलायची केसर डारी।
कृष्ण को भाग जगावहनाथजू भात के साथ रूचिर रस चाखी।।

भोग धरे व्यंजन साधिके दूध की नाथ बनाई मिठाई।
छाक बहुत विधि षडरस व्यंजन मालपुआ अरू खीर बनाई।।
गोरस के दधि छान के लालजू सोन्धी बड़ी अनुरूप सुहाई।
आइये नाथ जुगल सरकार जू साथ सखी वृज ग्वाल कन्हाई।।

जानत हो प्रभु दीनदयाल जू एक सहारो तुम्हारो कन्हाई।
तुम प्रभु घर घर महि विराज हु काह न जानहुँ सकल गुसाई।।
पार नहीं तुम्हारी करूणा को जीव जगत रक्षक हिय मोहीं।
राखो तो लाज रहे प्रभु कृष्ण की नाही तो डूबत नाव कन्हाई।।

आप कृपानिधि दीन के बन्धु हो नाथ अनाथ के सब जग जानी।
वेदन में अरू सार पुरान के ब्रह्मादिक जेहि पार न पावहीं।।

नाथ कृपा करिके प्रभु दीन के भव बंधन अब कहिये स्वामी।
जग जीवन जन राग जरावत कृष्ण की नाव उतारिये स्वामी।।

आज सरवन संग आवहु नाथ सो दास को भाग जगावहु स्वामी।
मधुर मुरलिया मुख मँहु साजी के संग सखी वृषभान दुलारी।।
तान सुनाइके वेणु के नाद की भव-बंधन अब कारियस्वामी।
कृष्ण को कर्म रहे यहि नाथ कि नाथ को ध्यान धरौं चित माँही।।

दोहा :

आज सुनो प्रभु दीन की बहुत गई करतार।
तुम प्रभु दीनानाथ हो दीन दयाल कृपाल।।
नाथ न धरम न करम है कलियुग में मतिमोरी।
जो प्रभु दीनानाथ हो विनती सुनियो मोरी।।
हों प्रभु बंधन में परयो प्रभु भव बंधनहार।
अबकी बेर उबारियो जग के पालनहार।।
हों प्रभु कमधिय प्रवर प्रभु तुम दीनानाथ।
जो अबकी प्रभु न सुनी जाऊँ कहाँ करतार।।

आज बाल छबि देखो जी लाल की नन्द महर घर अग जग साई।
पीत फगुलिया तन छबि सुन्दर चपल नयन मुसुकानि सुहानी।।
अरूण अधर दुई दशन मनोहर घुटनेहु चलत भुवन पति स्वामी।
दधि ओदन मुख किलक सरस अति मात जसोमति बलि बलि जाऊँ।

आज मगन मन कंज नील तन रूप शील निधि सरस सुहाई।
दरस सुखद अति चपल भ्रमर दृग चितवन मधुर मनोहर ताई।।

आज उछाव हृदय तन पुलकित ग्रह कारज नहिं विषय सुहाई।
नाचत नंद महर मणि आँगन त्रिभुवन नाथ बाल छबि भाई।।

दीनदयाल दया करिये अब लीजिये सुध करूणानिधि स्वामी।
भाव कुभावहिं दास कहावहुँ बाहँ गहो प्रभु अन्तर्यामी।।

कर्म करे नहीं नीके दयानिधि भोगन में ही सदा सुधि राखी।
कृष्ण कहे प्रभु लाज रखो नहि देरी करो अब बाके बिहारी।।

भक्त हो जो तो तुम्हारो मुरारी तो काहे को पीर उठावतो भारी।
हों वृजनाथ को दास कहावहुँ नाथ न चाकरी जानूँ तुम्हारी।।

भोग जो हो तो नहीं मन में प्रभु दर्शन की सुधि लेती तिहारी।
नेम न प्रेम न नाम को स्वाद जो जानूँ तो जानूँ श्री बाँके बिहारी।।

दीन के बन्धु कहावत हो प्रभु दीनन में अति दीन कहावहुँ।
पापिन में मुखिया में बड़ो प्रभु पापिन को भवपार लगावहुँ।।

नाव हमारी पड़ी मझदार में और न जानहुँ सीध सुभाऊ।
कृष्ण कहे प्रभु नाथ अनाथ को बेगि करो प्रभु नी को उपाऊ।।

जबसे प्रभु सृष्टि करी जग की जग के बंधन ही में पड़्यो हूँ।
देह की गेह की और समाज की बातन में हियो हारि रह्यो हूँ।।

मैंने सुनी प्रभु बात बढ़ेन सो जन जन मन प्रभु बास किये हैं।
कृष्ण कहे प्रभु बास किये जहाँ क्यो नहिं नाम को बास दिये हैं।।

आप कृपानिधि अग जगनायक पालक हो जग के अविकारी।
जे नहिं भक्ति करी प्रभु की तिनहुँ की प्रभु पतवार सम्हारी।।

कृष्ण को नाथ सदा अधरासी सदचित चंचल काम पुजारी।
उद्धारक हो पतितों के प्रभु जनि धाडहु मोहि गरीब के स्वामी।।

ब्रह्म अखंड अछेद अभेदन नाम न रूप न वेदहि जानहिं।
शिव ब्रह्मादि मुनीस अन्नतहुँ शुक सनकादिक पार न पावहिं।।

कौतुक दीख परयो सखि आज रहे भरि धूरि गहे दधि पाणी।
कृष्ण कहे बड़भाग जसोमति गोद खिलावति सारंगपाणी।।

कंकण किंकिंण की धुनि राजत कुंचित केश जलज दृग वामी।
नन्द महर घर साज दयानिधि अनुपम छबि चितवन अति बाँकी।।

गोरोचन शुभ भाल विराजत पीताम्बर शोभा छबि छाजी।
कृष्णदास प्रभु स्वामी दयानिधि बसहुँ हृदय मंदिर एहि भाँति।।

आई शरद ऋतु पूरनचन्द है शीतल मंद सुगंध की जै जै।
हेरत तान मधुर मुरलीधर चितवनि बाँकी सुहावनि जै जै।।

वृन्दावन छबि बरनि न जाई बृज जुवतिन संग श्याम की जै जै।
कृष्ण कहे प्रभु स्वामी दयानिधि सोभाधाम बिहारी की जै जै।।

तुम समरथ भगवान जगत हित नारद श्राप लियो अविकारी।
गीत अधम नित अमिष भोग करे तेहि दीन्हो परम पदभारी।।

बेर चखे शबरी के हृदय भरि नारी अधम निज धाम पढ़ाई।
कृष्ण को नाथ ने जन्म दियो दया करियो मोहि काही भुलाई।।

तुम प्रभु सब घट माँहि विराजहु पालहु जग बिन भेद विचारी।
जूत निशाचर खल अति कामी गति दीन्हों निर्भय अविकारी।।

परम पाप रत अधम अजामिल पाई परमगति नाम उचारी।
गौतम नारी को श्राप नासई सनाथ करि मोही नाथ बिसारी।।

आज सखी वृजराज के आँगन कौतुक दीख परयो अति भारी।
ब्रह्म अनन्त कहे श्रुति सेतु न ध्यान मुनीन्द्र परे अविकारी।।

वेद को सार जो शेष बनावत शारद गाई विमल जसहारी।
धूरि भरे तन माखन के हित नाचत त्रिभुवन नाथ कन्हाई।।

नाथ को नाम सदा सुखरासि है जीव के बंधन काट निहारो।
जाल जलधि भव भय जगजाल के नाम ने पाप को ताप निवारो।।

मानुज तन प्रभु दीन्हो दया करि मूढ़ फिरे जग जाल को प्यारो।
कृष्ण को नाथ सदा करूणामय नाम जपे जग जाई हिरायो।।

भोग को लोभ नचावत है प्रभु लोभ ने नाथ को नाम भुलायो।
लोभ भ्रमावत जग मृग जाल में मोह ने कर्म को जाल बुनायो।।

झूठ कपट छल को व्यवहार है झूठ ने क्रोध को रूप सजायो।
नाथ के नाम को एक सहारो है नाम से चित्त पे नाथ सजायो।।

अब तो प्रभु बेर भई बहु अंतक हाथन्हिं साज कृपाण डरावे।
साँझ की बेला भई जगनाथ जू दूर है वास डगर उलझावे।।

भीति बहुत उर दाह विपुल जन राग विषय सुख त्यागन पावे।
नाथ गहो यदि हाथ दयालु तो पार पड़े न तो बातहि जावे।।

कोटि जनम यदि चाव रहे मन प्रभु पद पद्म पराग को रागी।
राग यही रहे प्रभु पद-पंकज गति जिनकी उन्ह चरणन्हि लागी।।

लागी है पीर हृदय अति आकुल आओ कन्हाई सखा बृजवासी।
वासी को वास रहे ऋण-अंकुर वास करहुँ मन में अविनाशी।।

कौन से कर्म करे बनवारी-जू पाई के मानुष जनम वृथा ही।
डोरत हूँ मति मोरि लिये जगजाल में प्रीति बढ़ी अति भारी।।

भीति परी बहु मन चंचल अति जाया धाम सुतहि मन जाई।
ताप निवारो बसों हियँ आई के नाम को जाप करें दिन राती।।

बात पुराणन की सुठि साँची है दीनन महुँ भगवान विराजे।
जीव जनक जग कारण नाथ ही पलिछन अणुकण माँहि सुवासें।।

राग बसे जगनाथ दिखें नहिं आँख के अन्ध को कौन निवारे।
मूरख भ्रम तजि देख दयानिधि सकल जीव जगरूप सुहावे।।

ऐसी करो प्रभु दीनदयालजू वास करो प्रभु रोम· गुसाई।
नैनन में दिन रैन रहो प्रभु बसि जाओ हियँ अन्तर्यामी।।

कर्ण सुने शुभ नाम रसामृत चित्त की कोर बसे बनवारी।
वाणी करे गुणगान जुगल छबि हाथ करें प्रभु सेवा तुम्हारी।।

आप कृपालु सदा सुखरासी हो आरत हर जनरंजन स्वामी।
करूणाकर प्रभु बाँह गहो जनि छाँड़हुँ मोहि भव सागर माँही।।

कोटिक काज जगत जन्जाल भ्रमावत कीट पतंग की नाई।
जग के फन्द छुड़ावन हारे हो नाथ दयालु शरण सुखदाई।।

भक्त के साथ रहें करूणाकर दीन के बन्धु दयानिधि स्वामी।
भक्त में नाथ को वास रहे भगवान को भक्त की कीरति प्यारी।।

छोड़ के भेद कपट छल दम्भ तजे अभिमान भजे बनवारी।
कृष्ण को नाथ सदाचित्त माही विराजे नहीं तेही व्याधि सताहीं।।

चरण रहे प्रभु धाम के रागी सुवाणी विलास सुकीरति गाई।
कर सेवा महुँ माथ नवे प्रभु दीनदयाल के विग्रह माही।।

काज अकाज सदा मन मन्दिर बसहु नाथ जग जनम गँवाई।
ऐसी करो प्रभु श्यामली मूरति नाथ दिखाई बसों हियँ आई।।

आप दयानिधि भक्त जगतहित लीला तनुधरि वृज महिं आई।
लीला ललित केलि बालक छबि ग्वारन संग नित नवल सुहाई।।

कोटिक शारद शेष बखानहिं कीरति अनंत पार नहिं पावहिं।
कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड पती प्रभु वत्सपाल जय जयति गुसाई।।

भोर भये से उठे नन्दलालजू माई ने कण्ठ लगाए कन्हाई।
धन्य जसोमति कौन करम किये हाथ न्हवावति अग जग साँई।।

केश बनाये सजाई के भूषण गोरोचन शुभ भाल सजाई।
मोर मुकुट मकराकृति कुण्डल कर पंकज नवनीत सुहाई।।

काह लाला तुम कैसी करी यह चोर शिरोमणि लाल कन्हाई।
लोग कहे तुम त्रिभुवन नाथ हो नन्द के लाल अनोखे गुसाँई।।

मैं घर कारज भूरी गई तुम सूने में आन करी चतुराई।
गोरस बनरन्ह बाँटि के लालजू भोले से ठाड़े हो प्यारे कन्हाई।।

बात हमारी सूनो नन्दलालजू या उगरी मत आओ कन्हाई।
देख के साँवरी सूरतिया मन नेक न ग्रह कछु काज सुहाई।।

श्यामजूँ पाक की बेला विचारिके वेणु की तान सुनावहु नाहीं।
टेर सुनत मन काज न लागत सास के ताने हिय बिंद जाई।।

और ललन तुम्हरी मुरली मँहु जादू सो जान परे हियँ नाहीं।
वेणु की तान परे जब तो लगि सूखी लकरियन रस बसि जाहीं।।

भानु कृषानु की आँच तपै बहु बन्शी की तान अगनि बुझ जाई।
भोजन की विरिवा में लला तेरी बन्सी की तान हियों झुकसाई।।

आओ दयालु हृदय सिंहासन हो आरूढ़ विराजहु स्वामी।
दीनदयाल रमापति तनमन राजहु नाथ दयालु गोसाँई।।

कर्माकर्म शुभाशुभ बस जहाँ जनम धरूँ प्रभु कीरति गावहुँ।
नाम रसामृत भ्रमर सततमन श्रवण सुजस सुनि सुधि बिसराऊँ।।

है करूणाकर जनमन रंजन कीरति विमल मति मुनीसन्ह गाई।
है जग जनक भगत भय भंजन देहु विमल मति भक्ति छड़ाई।।

है सुखसागर दीन कृपाकर हरहु करट कलेश बड़ाई।
कृष्ण दास के स्वामी बसहु मन नित नूतन यश प्रेम जगाई।।

आप कृपानिधि नन्द महर घर बालक वेण लिये मनुसाई।
नाथ त्रिलोकी के स्वामी दरानिधि बाल केलि जन मन हरजाई।।

ऋषि मुनीस मन ध्यान न आवहु धन्य धन्य रंजन स्वामी।
मात जसोमति को सुख देवहु ऊखल आप बन्धाय गोसाई।।

आज सखन संग श्याम विराजत कर पंकज दधिभात सुहाई।
चिन्तित मन हरि बन महुँ डोलत गोधन चरतहुँ गयो पराई।।

श्रवण सुजस सुन कहत चरित जस तजहिं जगत हरि कीरति गाई।
सोकि ब्रह्म यह अनत कछुकि यहि भ्रमित विरिजय बुद्धि बौराई।।

मानुष तन को लाभ नहीं यदि भ्रमिये जगत जगजाल जनाई।
लीजिये लाभ सदा मन मंदिर कृष्ण कन्हाई को रूप बसाई।।

रूप बरयो मन मँहु नन्दलाल को विश्व रूप प्रभु रहे दिखाई।
कृष्ण को नाथ है नाथ अनाथ को नाथ बसे जग जाई नसाई।।

ज्ञान विवेक को संबल पाय जो साधक भक्ति करी सुख खानी।
कृष्ण को नाथ सदा चित मीहिं रहे नहिं माया तेहि निभरानी।।

चिन्तन में हियँ मीहि विराजत जे सम शुद्ध हृदय अति ज्ञानी।
जिन्ह प्राणिन्ह मँहु प्रीति तिन्हाहिं रह ठाकुर कृष्ण कोनेह बड़ाई।।

कृष्ण कन्हाई को ध्यान धरौहिय धाम धरणि सुत कीरति बाधे।
शोभा धाम की मुरति प्यारी पे लागी लगन सुख साज सजावे।।

दीनदयाल की कीरति को सुख नारद शुक विरिंचि मन भावे।
रे राउ हृदय समझ रस राज को राग रहे सोई राग सुहावे।।

दुःख दलन सुख करन बसहु मन नीलजलज शुभ बदन दिखाई।
बास सुबास बसै जस पुष्पन एहि विधि हृदय बसहु महुराई।।

दीनदयाल जुगल सरकार जू हरहु पीर भव अनल बुझाई।
कृष्ण को नाथ दहत भव कानन राग मिटे भव निधि तरजाई।।

दीन के नाथ जुगल सरकार सकल जगं नायक आरत हारी।
रमणी सुतग्रह जगत पदारथ मोह की डोर बान्धि नचावहिं।।

नाथ कृपा करिये प्रभु दीन की नाव परी मँझधार गुसाईं।
कृष्ण के नाथ शरण सुख रासी हो करणधार प्रभु होऊ सुहाई।।

ए री सखी सुन नन्द के लाल को आज दरस भयो द्वारे खड़ी थी।
मीठे बोल रसीले कन्हाई के मोर मुकुट मुसुकानी छबी थी।।
बैरन बन्सी सजी अधरन पे मोती से दाँतों की प्यारी लड़ी थी।
कर लकुटी भ्रकुटि अति बाँकी थी बाँकेबिहारी की प्यारी हँसी थी।।

आज सखी शुभ कीरति गावहु नन्द के द्वारे उछाव बड़ो है।
तीन त्रिलोकी के नाथ रमापति वृजमहिं नन्द को लाल भयो है।।
गोकुल में रंग की चमयी वृज वनितन शुभ सिंगार सज्यो ह।
गोधन गोरस दूध दधी नवनीत की भरि को बानो बन्यो है।।

री सखि कौतुक देखहु जाइके राजकुँवर नन्दलाल कन्हाई।
त्रिभुवन पालक ग्वारन के संग खेलत करत रार अति भाई।।
जोगी जति नित ध्यान धरें जेहि परमानन्द मगन मुनि ज्ञानी।
सोई जगनाथ करे नटखटपन छाछ के लगी है रूठे कन्हाई।।

प्रीति करी वृजनन्दन से मन काज न सूझे सखी हियँ माँहि।
कृष्ण दिखे चहुँ ओर दयानिधि चितवन चोट से चित्त डिगाई।।
आज चलो सखी नन्दमहर घर कान्हा की लीला सखी मन भाई।
अग जग नायक बाल रूप छबि मात जसोमति बलि बलि जाई।।

काह कँरू सखि रूप कन्हाई को नैनन से हियँ माहिं समायो।
पीर कहा कहिये सखि बावरी गे साज समाज गँवायो।।

प्रीति की रीति न जाए कही सखि कौन को सत्त रहे न बिलायो।
बाल कन्हाई बसै वृज में वृज बनितन को मन भ्रमर बनायो।।

पहिले तो नाथ जू कीन्ही कृपा बहु गोप बने वृज जन हरषाये।
लीला नाथ बिहारी कन्हाई जू चित्त हरे बृज जुबतिन्ह सारे।।
ऐसे बसे मथुरा बृजवासिन्ह भुले हो नाथ जसोदा के जाये।
जाई बसे मथुरा बुजवासिन्ह भूले हो नाथ जसोदा के जाये।।

आज कन्हाई को रूप धरयो वृषभान लली हियँ श्याम भई हैं।
मोर मुकुट कर वेणी सजी मुसुक्यानी है प्यारी ओ प्यारी छबि ह।।
हाथ लकुटी भुकुटी अति बाँकी है दीनदयाल के रंग रंगी है।
बौरि फिरे बृजकुन्जन माँही सो नन्दलाल के ध्यान में लाली नई है।।

कुन्जन मीहि रहे हरि खेलत ग्वारन के संग रास बिहारी।
बाहि समय सखि गोकुल माहिं रही मग जोहती राधिका प्यारी।।
कृष्ण दरश हियँ हरष पुलक तन कम्पित गति मन मुँह मुसुकानी।
धीरे से सन्मुख आए मुरारी तो आँख की कोर झरावति पाना।।

आज ललाचित चाव मिलन वृषभान लली बरसाने की बाई।
खंजन हग महु अंजन डारिके पान चबाय के वेणी बनाई।।
बेंदी धरी हँसि बिन्दिया सजि पुनि मौसिन माल हृदय अति भाई।
घूँघट काढ़िके प्रीति की रीति को ग्वारिन वेष फिरें सुरसाई।।

आय गए नन्दलाल सखन संग होरी को रंग सज्यो है सजीलो।
भर पिचकारी चलाई कन्हाई सो गोरी को रंग भयो है रंगीलो।।

बोली सखी तन रंग रंग्यो अब रंग कन्हाई करे जे पे डारो।
बीर की सों मोहिनी को लगे न गुलाल तो आँख बचाइके डारो।।

आए कन्हाई भरी पिचकारी रही मुसुकाय सखी हिय माँही।
लाल को कष्ठ लगाए सखी फिर छतियन दाह बुझाऊंगी आली।।

है चितचोर सखी वृजनन्दन काह करूँ दिन चैन न राती।
काह हमारो बिगारी है जेठे सो काह को नित्य की आरत भारी।।

या बिच सोई सखी वृजचन्द सो खेलती होरी लगाये मुरारी।
खेंच के नन्द के लाल को साँवरी लेके गई गृह गर्भ मँझारी।।

खेल के रंग रंगी निज चाह सों वेणी खुली रंगी सारी अनारी।
कष्ठ लगाय कही मुसुकाय कि अद्वयोइतै पुनि कृष्ण मुरारी।।

जाको धरे नित ध्यान मुनीसहि छोड़ के संग सृजन सुखदाई।
और न पावहिं पार अनन्तहु बेदहि नेति को शब्द उचारहिं।।

ब्रह्म अखन्ड सदा सुखरासी न गोचर गोनहिं रूप न भानहिं।
कृष्ण कहे वही स्वामी दयानिधि ग्वारनियों संग खेले कन्हाई।।

सुनति हो सखी जहाँ श्याम गये तहाँ जाएँगी काह करेंगी इहाँही।
चैन गयो सुख नाहि रहो सखि वृन्दावन छवि मन न सुहाई।।

लै गयों प्राण हमारो कन्हाई सो का करि हैं कछु सूझत नाहीं।
कृष्ण को नाथ बसैज हाँ आली सो बास सुबास भलोइत नाहीं।।

बोली सखी मनहुँ कुम्हलाई सदा इस रैन बसी अँधियारी।
रह गई बातहि बीती सुखद रति जमुना कूलहि बा छबि नाही।।

धन्य भई मथुरा की निवासिनी मुख पंकज जे सरस निहारहिं।
कंस को काह बिगारो अली हम जिन पटकयो मँझधार मँधारी।।

एक सखी कह लालन के हित काहे की चिंता हमहिं उर धारहिं।
जैसे ही लाल गये तजि प्रेमहि वैसी ही काह न बीते हमारी।।

बोली सखी एक हम कहुँ आली कठिन उर भाँझि से कोढ़िबो लालहि।
प्रीति की रीति को जाने सखी जेहि लागी सो लागी लगी रह जाई।।

आज सखी मन आतुर चन्दहि देखन के हित हियँ हुलसानी।
चन्द हमारो बसे मन माँहिजो गोकुलचन्द बसै हियँ आनी।।

मन महुँ कृष्ण की मूरती राजति बतियावति दिन रैन सुहाई।
कृष्णदास प्रभु मोहि देहु वर नाथ को ध्यान धरो चित्त माँही।।

काह बिसूरति हो सखि लाल को ध्यान धरो चित्त में रह जाई।
चित्त की चिंता मिटेगी दरश तब लीजिये मन महुँ होई सुखारी।।

हियँ में समाय रहयो चितचोर तो बलियन को सुख लीजिये भारी।
बात करहुँ उर माँझी मिलहु नित या विधि सन्मुख लाल सदा ही।।

एहो विधि यह कैसी करी कस बालक बुद्धि तुम्हारी भई है।
नन्द के लाल को संग दिवाय के प्रीति बढ़ाई के दूरी दई है।।

काहे विछोह दियो मनमोहन दूर बसे हियँ पीर बड़ी है।
हाय कन्हाई जूँ लूट लियो मन लियो मन देह में श्वाँस वृथा अटकी है।।

बोली सखी कुम्हलाई भली यह बात भली उर सोच बड़ो है।
या बृज में रहिबो बसिबो तरबार की धार ही पे चलिबो है।।

कैसे धरूँ मन धीर सखी एहि चित्त की कोर में श्याम बसो है
कैसी करी विधि ऊपर से भर आय वसंत को तीर फँस्यो ह

आज सखी चलो नन्द के आँगन लाल कन्हाई को दर्शन करिज
शीतल मंद बयार बसंत की चित्त दहे घर काज न सूझे
होरी को रंग रंगे तन ऊपर भीतर को रंग काह करी जे
घर बाहर उर श्याम ही श्याम बसै घनश्याम की बोलो जी जै ज

काहे कन्हाई यो रूप सजायो तन-मन की गति रुप ने बाँधी
ऊपर से वृजराज कन्हाई जू तीखी लगे हग छबि तिहारी
या बैरन मुरली को लाला मति राग सुनाओ रंगीले बिहारी
तान सुने तो करेजे पे लागत काम सरासन चित्त डिगाई

श्याम को ध्यान जबहि मन आवत प्रेम हरज सुख हृदय दुलासो
तन को ध्यान रहे नहिं अधो मन तड़पत कहुँ कछु न सुहावे
काहे कन्हाई दियो विरहागिन राग बढ़ाई सनेह दिखा के
जाय कहो उद्धव वृजचन्द से नाथ दरस बिन जग नहिं भावे

तुम अधो के ही जोग सिखावहु देह हमारी रहे एहि द्वारे
वृजभुषण जेहि दिन मधुपुर गए मन हमरे रहिं रहे हमारे
राग जरे जब काम न हो मन जोग जतन कोई तबहि निबाहे

राग रसिक मन भ्रमर चपल अति काम को बाण सदा उर दाहे
ऊधो लोक लाज गई बिसरौ है काज सभी नन्द के लालजू को चित्त अनुरागी है
बावरी बना के हमहिं रसिक बिहारी जू मथुरा जाय सारी सुधि वृज की बिसारी है
ऐसो यदि जानतीजू प्रीति क्यों बढ़ाती **कृष्ण** अब तो तन रोम रोम सजे बनवारी है
श्याम की सलोनी छबी बसै मनमंदिर में वृज की सुधि भूले नाथ निठुराई धारी है

आराधना श्री रामचन्द्र जी

है करूणाकर अभिनव सुन्दर सहज सनेही जन मन रंजन।
रूप अरूप अनूप अनामय अनंत अनाम जन उर चन्दन।।
धरि शील सम्पन्न दयानिधि सदा समान प्रणत् दु:ख भंजन।
अगम अगोचर नाम रूप गुण रहित तदापिजन कमल दिवाकर।।
हे दीनों के नाथ जगतहित रूप साजि नित भव भय हारी।
करँ कृपा श्रुति सेतु सम्हारहु वरदायक जगपति असुरारी।।
जे अनन्यगति तिन्ह प्रतिपालहूँ सहज रूप देवहु अविकारी।
दीन बन्धु दयाल प्रणत हित भगत हृदय सुख आनंदकारी।।
हे कमलाचित चातक जलधर लीलातनु चितचोर मुरारी।
करूणाधाम जगन्मय मनहर करहूँ कृपा गुरूदेव खरारी।।
हे शंकर मानस मराल प्रभु सकल जगत कारण हितकारी।
भगत हेतु प्रभु अमित रूप धरि लीला ललित श्रवण सुखकारी।।
आदिरूप सूकर वपु धारी धरा धरी कनकाक्ष संभारी।
बलि के जग्यजाई वामन वपु विश्वरूप धरि सुर सुख साजी।।
प्रभु चरित जग जानई स्वामी अंशरूप अवतरेऊ गुसाई।
धरणि देहि त्रैलोक सुजस सजि धरणि पाल पृथु जय सुखरासी।।
ऋषभ रूप प्रभु परम हंस बनि भगति ज्ञान धारा सरसाई।
राग रूप भव जलधि अगम अति करण धार जय जयति गुसाई।।
कर्दम प्रजापति ग्रह प्रकरे सांख्य-शास्त्र सब प्रगट बखानी।

कपिलदेव प्रभु जय अविकारी देव हूति गति दीन्हि गुसाई।।
मत्स्यरूप प्रभु प्रलय जलधिजल जगत्तरणि प्रलयाब्धि बिहारी।
जगकल्याण रूप जलचर वपु धन्य धन्य जय जयति गुसाई।।
सकल सुरासुर सर्प रज्जुकरि मन्दर गिरि-धरि पयनिधि माँही।
करन लगे अमृतहित मन्थन मन्दर गिरि नहिं सकहिं सम्हारी।।
मन्दर धारि गरूड़ आसन प्रभु अतुल तेज बल सींब गुसाई।
पयोनिधि थापित कीन्हि दयानिधि सुगम कीन्हि सुरगण कठिनाई।।
कच्छप वपु प्रभु धारि दया करि मेरूमार अति सुर दुःख पाई।
कण्डु मिटी मथनि मन्दर धरि फिरहि पीठ जिमि तूल गुसाई।।
कनक कश्यपु सो दैत्य प्रवरखल प्रजा दीन्ह जो आरत भारी।
ताके सुत प्रहलाद भक्तवर जिन्हहिं असुर दीन्हें दुःखभारी।।
सहज कृपालु भगत-भय-भंजन प्रणत-पाल प्रभु जन मन हारी।
प्रगट कीन्ह वपु सिंह अर्धनर जयतिं नरसिंह गुसाईं।।
गजयूथ आतुर अति ध्यावत भक्त प्रणत दुःख - भंजन हारी।
कृपा करो हे नाथ दयानिधि समय गिरा प्रभु हेतु उचारी।।
तुरत दौरि प्रभु आय जूथपति भक्त त्रास गज-ग्राह उबारी।
दीन-बन्धु हरि रूप व्याप्त जग भक्त वसल जय-जयति गुसाईं।।
जमदग्नि घर प्रगट भये प्रभु हाथ कुठार क्रोध अति भारी।
इक्वैस बार हने क्षत्री खल जग्य विधान रचेबहु बारी।।
ब्राह्मण गण सब सुखी भये संतापित खल नृपति दुराईं।

परशुराम प्रभु जय सुखरासी अति विक्रम रति जयति गुसाईं।।
धरिणी सभीत गई विधि धाम अमित खलबाड़ त्रास अति बाढ़ी।
आरत वचन करी स्तुति सुर विधी धरणी संग त्रिपुर अराती।।
करूणाकर-प्रभु अमय कीन्ह नभ गिरा व्याप्त भई निर्मल वाणी।
मुदित भये सुखरूप प्रभु अवतार हेतु सुर जतन बढ़ाई।।
राम रूप अवतरेऊ जगत हित अंश सहित प्रभु चारिऊँ भाई।
लखन शत्रुघ्न भरत रूप प्रभु कृपा करी नर वपु श्री साँई।।
अवध अमित मंगल दशरथ गृह कौसल्या सुत राम गुसाई।
लीला करि हरी बाल रूप छबि धन्य धरणी गौरव रघुराई।।
जगन्मात अवतरी जनकघर रूपरासि श्रुति कीरति गावहिं।
धनुष जग्य भव धनुष भंग करि सीता ब्याही मोद सुख बाढ़ी।।
जनक भाग्य अति आज सकल सुख भये सुता सब भाई बिआहीं।
जनकपुरी सब मोद मुदित नर नारी अमित सुख बरनि न जाई।।
दुलहिनि सहित एकल भ्राता संग दशरथ भाग्य कहो नहिं जाई।
आई बरात अवध नर नारी मोद मुदित शुभ मंगल गावहिं।।
आज अवध सुख कीरति साजहिं धरे रूप शुभ मंगल आवहिं।
जाके घर छबि धाम जगतपति रमा सहित रहको सक गाई।।
सुख मंगल सब रूप कृतारथ नृप सुख बसहिं सहित सब रानी।
सीताराम विमल छबि निरखत अवध भई सुरपुर रजधानी।।
जहाँ रमापति रहत रमा संग संपति सकल तहाँ चलि आईं।

प्रथिवी पुरित सकल पदारथ भई सकल शोभा रस खान।
सियाराम सिंहासन राजे सहज सुभाव रम्य तन सुन्दर।।
असि अभिलाष नृपति गुरू आयसु पाई भये हर्षित नारी-नर।
राम विमाता कैकई मति मन्थरा बिगारि।।
वर माँगी दशरथ छली दीन राम बनवास।
चौदह बरस राम वन सिय सौमित्र समेत।
किये बास मुनि वेष धरि सहि वन अमित कलेश।।

सुरन्ह काज हरि धरि अवतारा। कीन्ह चरित प्रभु विविध प्रकारा।।
दण्डक वन तापस मुनि ज्ञानी। रहहिं नाम जपि हरि उर आनी।।
कामरूप रजनीचर जूथा। सदा पाप रत अमित बरूथा।।
ते मुनि त्रास देहिं दिन राती। कहि न जाय तापस आराती।।
प्रभु आरत हर जगत गुसाई। करूणाकर दयाल रघुराई।।
भक्त सरल चित सहज उदासा। राम न सहहिं भक्त कर त्रासा।।

निज भगत हित प्रभु जगत कारण हेतु एहि अवतारि ले।
कीन्ही कृपा प्रभु दीनबन्धु दयालु स्वामी दास के।।
सीता हरि अति नीच रावण त्रास जेहि सुर मुनि सदा।
त्रसित व्याकुल प्रभु पुकारहिं नाथ रावन भय करा।।
अति पाप रत रावण निशाचर नाथ सहित वरूथ के।
संहार करि खल अमित तारे दुख निवारे सुरन्ह के।।
ऋसि मुनि तपस्या रत विमल मति राम जे हियँ धरि धरे।
अति धीर जोगी भोग तजि जे भगति मति हरि भज रहे।।

तिन्हकी तपस्या सफल करन अहितु हेतु रमापति।
कीन्ही कृपा सब मुनिन्ह आश्रम सहित लक्ष्मण जाईके।।
कर धनुष तरकश गात श्यामल जटा मस्तक धारि के।
फिरहिं वन प्रभु भगत हित सुख देहिं बदन दिखाइके।।

प्रभु दीन्ही शुभ गति सकल ऋषि मुनि सुलभ दर्शन तिन्ह भये।
अनुपम अनादि अनन्त प्रभु धरि रूप नरजन सुख दये।।
जो आदिशक्ति कृपामयी जग सुजति हरति प्रभु प्रिया।
सो मात सीता मानुषलीला करति प्रभु संग पतिधिया ।।

जो शेष शक्ति अनूप शिर ब्रह्माण्ड सर्जप जिमि रहें।
सोई अनुज लक्ष्मण रामसिय सेवा विमल मन करि रहे।।
प्रभु निर्विकार समूह निसिचर रावणादि सम्हारिके।
दीन्ही तिन्हिं गति परम दुर्लभ अचल धाम पठाइके।।

जो विमल गति पाई सकल मुनि तपत अधिकारी भये।
बैकुण्ठ पाये तेडपि खल प्रभु रण निहारत जग तजे।।
रावण अनुज प्रभु भक्तिचित्त बड़भ्रात कहुँ बहु सीख दे।
पायो अनादर अमित क्लेशित राम पद-पंकज गहे।।

प्रभु शरण अशरण जगन्नायक करि कृपा आदर दिये।
दीन्हों अमय भरि कल्प जीवन देई राक्षस पति किये।।
जे वृक्षराज कपीस अंगद हनुमदादिक कपि रहे।
जे अधम देह अनन्त सेवहिं धन्य ते सियपति भजे।।

हनुमान वानर जूथ मुखिया राम नेह कृपा लहे।
अति वत्सला जगमात सीता जिन्ह कृपाकर वर दिये।।
भरत चरित्र अनूप अति प्रत्यक्ष मूरति नेह की।
भक्ति रस जेहि पाई जीवन सुरसरी प्रभु प्रेम की।।

अति प्रेम व्याकुल हृदयँ भरि जे राम पद सेवत रहे।
जे अवधि भर तप कीन्ह भारी अवध बसि तिन्ह को कहे।।
पति विरह सीता राम पद उर धारी नाम जपत रहीं।
जब लगि रही लंका विकल मति राम अर्पित मन रहीं।।

हनुमान अंगद आदि वानर सहित लक्ष्मण जाई के।
स्नानादि कृत्य कराई सादर लाए माथ नवाइके।।
मर्यादा समझि कछु कटु वचन राम सीता प्रति कहे।
यद्यपि अतीव पतिवृता उर सतत पति मूरति रहे।।

लखन अति आतुर विकल मन राम भाव विचारिके।
कीन्हीं चिता जगमात प्रेरित दीन्ही अगनि लगाइके।।
प्रभु जगद् व्यास अनन्त नायक अग्नि जेहि प्रगटित भई।
जो जगत जननी मात सीता सृष्टि जेहि जो जगमई।।

प्रभु मानुषलीला करहिं जगहित धरम थापन हेतवे।
अग्नि स्वयम् धरि रूप सीताहि गोद रखि साक्षी दिये।।
सीता लखन सहित सुखरासी हृदय सोचबन अवधि सुपासी।
अवधि बीति दुख भरत अपारा जीवन जाई विराह दुख भारी।।

पुष्पक माँगि सकल समुदाई। सीता सहित लखन दोऊ भाई।।
सरजू दर्शन हृदय अनन्दा। भये प्रसन्न सकल सुख कन्दा।।
अवध पहुँच जन व्यथा बुझाई। हर्ष अपार मोद अति छाई।।
भरत अवस्था बरनि न जाई। मात सकल सुखनिधि सरसाई।।

जटा निवारि मज्जन विमल भरत सहित प्रभु कीन्ह।
पर भूषण तन शोभ अति प्रभु छबि सर दृग मीन।।
गुरूवसिष्ठ आयसुकरी सजि सब तिलक समाज।
राम तिलक अभिषेक सुख हरष उदधि जल बाढ़।।

सियाराम जोड़ी मन भाई। सिंहासन छबि अमित सुहाई।।
राजासन जगपति सुखरासी। सकल सिद्धि धरिरूप सुपासीं।।
श्रुति सब धरि शरीर तहाँ आनी। रामचरित जस विमल बखानीं।।
सनकादिक सुरेस मुनि नारद। करूणानिधि दीन्हें बहु आदर।।
करूणाधार शम्भु तहाँ आए। सीयराम छबि मनहु सुहाए।।
अमित रूप रासी सुख कन्दा। सहज रूप रासी जगदम्बा।।
मन मराल शंकर छबि छाये। मुक्ता हर्ष बिन्दु दृग आए।।
रामरूप शोभा अति भाई। शारद शेष थके यश गाई।।
सरस प्रेम रस शिव उर आए। चरित सिन्धु मुख विमल सुहाए।।

प्रेम पयोधि सियापति शंकर मन रस मीन।
गद-गद कण्ठ विमलमती स्तुति सुखसर लीन।।

जयराम शोभा अमित छबि निर्मल सुयश यश धाम जे।

जयमति सुमति कीरति विमल तन श्याम राम नमामहे।
जयराम ब्रह्म अनूप रूप सुव्याप्त अग जग नभ मही।।
निर्गुण अनादि अरूप रूप सजाई जन आरत हरी।
जो सृजति पालति हरति इंगित पाई सृष्टी जगन्मयी।।
सोई जगन्मात सिया विराजित वाम भाग कृपामयी।
प्रभु जगत कारण खल उधारण सकल पालक राम जे।।
सप्त जग विरचित जनक जग हग विषय रहँ दासके।
जेहि नाभि संभव पंकरूह जग सप्त जग-धाता भये।।
सोई राम आनन्द राशि निर्मल यश सदा मम उर रहे।
अधरूप जूथ वरूथ लंकापति निशाचर नाथ के।।
मुनिन्ह मारहिं मख उजारहिं सुरन्ह जे अति दुखदये।
प्रभु सहज करूणा रूप जनहित सगुण रूप संवार के।।
श्रुति सेतु रक्षण हेतु निशिचर नाथ जूथ सहित हने।
ताड़का अति मारिका दु:ख रूप अतिशय भयकारी।।
उद्धारि तेहि निजधाम अचल पढ़ाई दीन्ही शुभगति।
सुग्रीव अंगद ऋक्षपति कपि मरूतसुत मुख यश दई।।
पाषाण गति पति शाप ताड़ित ऋषितिया पावन करी।
राम सर आतप प्रचण्ड सुताप्त क्षोभित जलनिधि।।
आतुर-गहे प्रभु चरण पंकज दीन्हि निर्भय सुखनिधि।
सेतु बन्धि अथाह सागर बान्धि प्रभु यदश निर्मले।।

मारग बनाई सुगम अगम अति शिक्त रूप नमामहे।।
जैहि नाम नौका बैहि भव सागर सुगम निधि जन तरें।
सो मनुष लीला करत अंबुधि बान्धि सो मम हृदि रहें।।
धन्य दशरथ जन्म जेहि सुत रूप अविनाशी स्वयम्।
धन्य माता कोसला जेहिं बालकेलि समिन्वतम्।।
हग विमल पश्यति सरस क्रीड़ा जगत्क्रीड़ित जगमयम्।
धन्य नरजे अवधवासी जन्म जिन्ह सुर गावहिं।
जे प्रभू अनन्त अरूप निर्गुण रूप छवि रस पावहिं।।
प्रभु विमल यश पूरित हृदय मम सतत ध्यान समिन्वतम्।
वाणी सुखद गुणगान रह नित देऊ प्रभु सेवा सुखम्।।

करि प्रभु चरित बखान शम्भू गए कैलाश तब।
मन प्रभु भक्ति रसाल हृदय तरंगित सिन्धुरस।।

राम राज अभिषेक अनन्दा। जलधि बाढ़ जिमि पूरनचन्दा।।
राम सकल आतम अवलम्बा। सीता सर्व सृष्टि जगदम्बा।।
राम काज आपहि चलि जाई। लखन भरत सुख हाथ बटावहीं।।
सकल प्रजा सुखरासि सयानी। मन क्रम वचन धर्म पथ गामा।।
सबहिं प्रेम मूरति सुख लेवहिं। राम नाई सिर श्रुति पथ सेवहीं।।
लोभी लोलुप दम्भी कामी। रामराज कोऊ एकऊ नाहीं।।
सुत जिमि राम प्रजा हितकारी। प्रजा देखि जिमि पितु महतारा।।
राम राज सुख बरनि न जाई। धर्म सकल पद नहिं कदराई।।

छल पाषण्ड द्वेष नहीं होई। पूर्णचन्द्र जिमि तम बिलगोई।।
राम प्रजहिं उपदेशहिं ज्ञाना। धर्म मार्ग शुभ कीरति गाना ।।
राम चरण पंकज सिय प्रीति। सवयम् सकल परिचर्या रीति।।
यज्ञ अनेक राम विस्तारे। अमित विधान दान बहु मारे।।
तेरह सहस्त्र वर्ष पर्यन्ता। रामराज सुख धर्म अनन्ता।।
प्रभु निज धाम प्रयाण विचारा। सकल अवधवासी कर साथा।।
सकल प्रजामति विरति निकामी। सकल परम पद के अधिकारा।।
राम सहज करूणायतन सकल प्रजा निज धाम।
दीन्ही अमितपद जेहि लागे मुनि जन सेवहिं राम।।
कथा कही बहु ऋषि मुनि ज्ञानी। रामसीय छविमति उर आनी।।
काग भुशुण्डि कथा विस्तारी। गरूड़उ गमन भ्रमरूज भारी।।
शंकर प्रेरित गरूड़ सिधाये। कथा सुनत मन हरष सुहाये।।
सती जगत जननी जेहि हेतु। तजी देह पितुमख दुःख सेतु।।
पुनि हिमगिरि घर जनम सुहाये। पुनिपति विमल तपस्या पाये।।
नारद तेहि पर भये कृपाला। सुमति दीन्ही उपदेश रसाला।।
सीताराम चरित मानस वर। जे नहाईं धोई सब कलिमल ।।
शंकर पार्वती प्रति गाये। दिये अमित उपदेश सुहाये।।
जग जननी सुनि कथा भवानी। भईं प्रसन्न मुदित हर्षानी।।
जगन्मात जगपिता सुहाये। ते अति रामचरित मन लाये।।
गाये राम अमित अवतारा। राम कथा नहीं अन्त अपारा ।।

जदेहि अवसर प्रभुजस अवतारा। लीला ललित कोटि विस्तारा।।
बाल्मीकि ऋषि सुभग सयाने। देवगिरा हरिचरित बखाने।।
रामचरित रस सिन्धु अपारा। भाषा भाषिति विधान निहारा।।
प्रेम भक्ति रस हृदय सुहाई। तुलसी गुरू प्रेरित रस आई।।

जिन्ह हनुमत प्रभु भये कृपाला। हृदय नाम दीपक उजियारा।।
सप्त सिन्धु रस अमित रसाई। प्रभु चरित्र रवि भ्रम तम जाई।।
आगम निगम पुरान अनुपा। सार कथा तुलसी अनुरूपा।।
भाषा बद्ध विमल सतरंगा। कीन्ह प्रकाशित राम प्रसंगा।।

हृदय तरंग पियुष रस सोहीं। रामचरित रस जन मन मोहीं।।
अमित रूप छबि कष्ट सुहाये। भक्ति प्रसंग सुवर्ण धराये।।
धन्य जनम तुलसी जग पाये। धन्य जनक जननी जिन्ह जाये।।
तेहि के पद धरि निज सीसा। कृपा करहु तुलसी कवि ईसा।।

जिन्ह कर जुवती भई गुरूकृपा। हृदय विरागऊ यऊजग छूटा।।
राग नसाई अमित सुख पावा। राम रूप छबि दरस सुहावा।।
ताकर चरण कमल शिरनाई। करहु मात मन भक्ति सुहाई।।
राम रूप रस अमित सिंगारू। होई सकल जग रूप कुढारू।।

राम कथा नारद सन्मानी। रतिमति विमल चरित रस मानी।।
परम भक्त जे सीतावर के। करत पान रसपान अमी के।।
जेहि कर श्रापधारि जगदीशा। मानुष जनम लिये प्रभु ईशा।।
जाकर वनवासी छवि दैखी। सती भ्रमित मतिसंक विशेषी।।

शिव कृपाल जेहि अति समझावा। प्रभु माया मति भ्रमरूज छावा।।
सीता कर तेहि रूप बनावा। माया पतिसन कीन्ह छलावा।।
प्रभु सीतापति सब उरवासी। लीला नर तनु ललित बिहारी।।
छल पाखन्ड राम नहि भावा। सहज सरल मति दीनदयाला।।
करूणाकर सब संशय हारी। लीला राम अमित विस्तारी।।
सति हृदय अति सोच गलानी। निज पति सकल ईश नहिं मानी।।
संशयशील पाई बहु त्रासा। झूठ बुलाई सती दुःख दावा।।
सती चरित्र सकल जग जाना। शिव तजि जाहि भगति भय माना।।
शंकर भगति राम मुख गाई। अनुपम भगत महेष गुसाई।।
तेहि कर चरणकमल मति आतुर। बन्हऊँ शीष धूरि धारि सादर।।
दुई कर जोरि मनाऊँ महेषू होऊँ। नाथ सु मति सुख पाँऊ।।
देऊ भक्ति उर विमल प्रसादा। होऊँ सनाथ मिटे भव बाधा।।
राम कथा विधि सभा सुहाईं। देव सकल रूप भक्ति सिराही।।
ऋषि अगस्ति शंकर सब गाई। राम रूप यश गुण प्रभुताई।।
शिष्य सुतीछन पति अति पाई। राम रूप मन भ्रमर बनाई।।
प्रभु करूणा निधि मुनि सन्मानी। दीन्ही प्रीति मति भक्ति दृढ़ानी।।
गीध अधम नित आमिष सेवी। दीन्हि तेहि गति राम सनेही।।
राम दीन्ह शिबरी सुख भारी। प्रभू स्वरूप दर्शन भव हारी।।
कपि हनुमान जान जग सारा। प्रभु सेवा जग जनम सुधारा।।
मात कृपा वरदान अमोघा। पायो हनुमति प्रेम पयोधा।।

राम भगति संतत सिवकाई। राम कृपा अति सरल सुहाई।।
अजर अमर जग पूज्य अनूपा। रामदास अतिशय सुखरूपा।।
प्रभु हनुमत पगधरि शिरधूरी। विनवऊँ नाथ कृपाकर भूरी।।
करहु दास मन भक्ति छढ़ाई। सीताराम चरण रति आई।।
भरत भक्ति तनु धरे शरीरा। प्रभु विछोह अति विकल अधीरा।।
राम तपस्या रत वनवासी। वृत विधान सेवहिं फरहारी।।
भरत राज कारज सुख साजा। वैभव अति विशाल बलराजा।।
अति वैभव तजितप जेहि कीन्हा। चौदहबरस कठोर व्रत लीन्हा।।
चरण कमल बन्दऊँ तिन्ह केरे। भरऊ भाव उर भक्ति घनेरे।।
करहूँ कृपा मतिराम सनेहू। देऊ हृदय रघुपति पदनेहू।।
सीयराम कीरति अमिताई। कथा सिन्धु गम्भीर सुहाई।।
शेष महेश थाह नहि पाई। चरित बिन्दु भव अनल बुझाई।।
दास अनुग्रह शील कृपाला। हुंऊए भरत प्रभु दीनदयाला।।
विमल भक्ति प्रसाद उर देहू। होई विरति जगराम सनेह्।।
नारद ऋषि प्रभु दीनदयाला। सुमति भगति रस हृदय विशाला।।
हरि पार्षद मुनि परम सयाने। देव सभा बहु आदर माने।।
सुर ऋषि जिन्हहिं कहई सब कोई। शाप प्रसंग भ्रमण जग होई।।
दक्ष श्राप जिन्ह जग हित लागी। सप्त जगत हरि यश विस्तारी।।
ऋषि नारद मुख कही निज होनी। सत संगति प्रभाव यश जोगी।।
कबहुँ रहे नारद गन्धर्वा। रूप अमित अभिमान निरूपा।।

ब्रह्मसभा महुँ पाई निमंत्रण गान हेतु आए समाज संग
तहँ अप्सरा साथ बहु आई रूप गर्व अहमति अधिकाई
ब्रह्मसभा अपमान विचारा तेहि कर दीन्ह श्राप अतिगाढ़ा
शूद्री गर्भ जन्म तेहि पाई दासी कर्म करति सो माई
चर्तमास करिबे ऋषि आए सत्संगति हरि नाम सुहाए
कथा चरित हरि भक्ति रसाई झूठन खाई मति भक्ति द्दढ़ाई
संत हृदय नवनीत समाना संत हृदय बालक पहिचाना
चलत समय उपदेशे नामा बालक मन हरि प्रेम सुहाना
सर्प दशित बालक महतारी बाल छांड़ी गई गति अनुसारी
सहज विराग बालमन आवा कथा सुनी हरी चरित सुहावा
बालक यत्न किये बहुतेरे उर सजाई ध्यान प्रभु के रे
प्रभु करूणाकर दीनदयाला छबि दिखाई उर कीन्ह उजाला
प्रभु बालक दीन्ह आदेशा करम नसाई आऊ तजि देहा
तहाँ रहि कर्म रूप प्रारब्धा भोग देह तजि भये सुख रूपा
सत संगति कर अमित प्रभावा दासी पुत्र भयऊ प्रभु दासा
भक्त अनुग्रह प्रभुहिं सुहाई सन्त कृपा पार्षद गति पाईं
नारद ऋषि प्रभु दीनदयाला करहु कृपा भक्त सुख दाता
नाथ अनुग्रह मो पर कीजे राम भंक्ति सुरसरि मन भीजे
वन्दऊँ सन्त चरण धरि शीषा होऊ प्रसन्न सकल मुनि ईशा
देऊ वरदान सुहृद सब केरे भक्ति विमल होवे मन मेरे

श्रवण सुखद रह सतत कृपाला। भक्ति सुधारस हृदयी उजियारा।।
जासे जग रूज ताप नसाऊँ। जहाँ जहाँ कर्म भोग तन पाऊं।।
प्रभु जस अनल दाह सब पापा। होऊँ सनाथ गाई प्रभु गाथा।।
नारद प्रभु अतिशय वरदाता। सहज कृपालु होऊ प्रभु त्राता।।
काग भुशुण्ड भक्त रघुवर के। सतत चरित रस सिन्धु अमी के।।
परम कल्प भरि जेहिं नहिं नाशा। हृदय प्रबोध सरस रस प्यासा।।
जिन्ह मुख कथा सुनी गौरीशा। निज मुख प्रभु करि अमित प्रशंसा।।
गरूड़ भ्रमित मन जिन्ह उपदेशा। जरे सकल चित मनसि क्लेषा।।
तिन्ह मुख कही सकल निज होनी। गुरू अपमान पाई बहु जोनी।।
नाथ उमापति करि तिनन्ह क्रोधा। दीन्ह श्राप पुनि बहु सुख बोधा।।
भक्ति प्रसाद श्राप संग दीन्हा। गुरू प्रसाद अनुग्रह कीन्हा।।
धाम अजुध्या जनम रसाला। शंकर जपत रहे सुविशाला।।
तेहि कारण शिव दीनदयाला। ईश कृपाल वरद शुभदाता।।
जन्म सहस्त्र शाप तिनह देईं। नहिं दुःख दुसह जनम मृति तेही।।
अप्रतिहत गति दीन्ह कृपाला। सतत स्मृति उर नहिं दुःख बाधा।।
भए श्राप बस जन्म अनेका। अक्षय स्मृति उर सतत विवेका।।
एक जनम लोभश ऋषि पासा। राम भगत अनुपम प्रभुदासा।।
जाई पूछि प्रभु कथा सुहानी। सगुण रूप प्रभु राम न आना।।
लोभश ऋषि निर्गुण उपदेशा। देहिं न चित नहिं मन रति लेशा।।
सगुण राम पूछे पुनि जबहीं। क्रोध चिन्ह प्रगटे मुनि तबहीं।।

क्रोध सहित तेहि श्राप दयेहू। अति अभिमान मूढ़ तोहि भयऊ।।
सुनत नहीं उपदेशहि मोही। चण्डाल बुद्धि काग किन हहोइ।।
क्रोधानल ऋषि श्राप प्रचण्डा। भये काग उड़ि चले मुशकुंडा।।
पुनि अनुमानि भूलि मुनि भारी। जानि तेहि अनन्य अधिकारी।।
तेही मुनि परम अनुग्रह कीन्हा। भक्त जान अति आदर दीन्हा।।
सतत अमर इच्छा नपुधारी। कल्पान्तक रह आयु तुम्हारी।।
अनन्य शरण़ प्रभु के जो होई। तिन्ह पर प्रीति करे सब कोई।।
पुनि मुनि कही मधुर अति वाणी। तात बुद्धि तोहि परम सयानी।।
राम भक्ति रस सुरसरि धारा। बहे प्रेम रस सिन्धु अपारा।।
जहाँ तोर आश्रम रह भाई। शत जोजन भव रूज नहिं आई।।
अति प्रसन्न मति तोरि विचारी। रहहु तात शुभ मंगलकारी।।
परम दयाल राम रघु राई। भई नभ गिरा प्रीति अमिताई।।
मुनिवर यह परम उदासा। अमित सनेही मम कर दासा।।
जे कछु तुम दीन्हेवर एही। मोर समर्थन सुभग सनेही।।
काग भुशुण्ड करहिं सतसंगा। ज्ञान भक्ति रस अमित प्रसंगा।।
प्रभु भुशुण्ड मनाऊँ बहोरी। कृपा करहु प्रभु दीन निहोरा।।
राम भक्ति कर अमित प्रभावा। जग जानत जेहि सब सुख आवा।।
राम सदा करूणाकर स्वामी। संतत कृपा रखहिं जन जानी।।
राम कृपा सुख बराठी न जाई। श्राप देहि मुनि पुनि अपनाइ।।
ऋषि-वर परम अनुग्रह कीन्हा। अजर-अमर इच्छित वपु दीन्हा।।

शंकर क्रोध दीन्ह अति श्रापा। पुनि प्रसाद नहिं जग कर तापा।।
ताप रहित तुम सदा गुसाईं। सेवहु सीता-पति रघुराई।।
राम कृपालु तुम्हहिं मन भाए। राम बाल-छवि मोद बढाए।।
दीन्ह सुधारस उर तम जारा। भक्ति तरंग हृदय उजियारा।।
कृपा करहु सेवक सुत जानी। राम भगति रति मति अनपायिनी।।
राम भक्त कर अमित प्रभाऊ। भक्त बात राखे रघुराऊ।।
होहु नाथ सेवक प्रति पाली। क्षण पल रति मति बसै खरारी।।
दीनबन्धु जगदीश्वर स्वामी। कृपायतन प्रभु अन्तर्यामी।।
मो पर कृपा करहु प्रभु सोई। मोरे मन प्रबोध जेहि होई।।
पुनि हनुमत पद नाऊँ शीशा। करहु नाथ प्रभु कृपा कपीशा।।
भक्ति अमित रह गिरा सुहाई। जासे गुण रस सिन्धु अथाई।।
रात्रि दिवस करि नाम उपासी। अहि कलिकाल न और सुपासी।।
नाथ भगत तुम दीन दयाला। देहु रामरति भक्ति विशाला।।
गान चहुँ प्रभु नाम रसाला। बुद्धि ज्ञान नही वाणी विलासा।।
एक आसरो प्रभुकर भारी। अमित दीन तारे अति चारी।।
एहि कलिकाल न बुद्धि प्रकाशा। सर्व विषय रस भक्ति सुभाषा।।
छल और कपट काई चिकनाई। कर स्नान ताहि कठिनाई।।
पाँव फिसलि पुनि उग्र स्वभावा। विषय राग ग्रह ग्राह डरावा।।
प्रभु कपीस प्रसिद्ध बलशाली। पाप रूप लंका जेहि जारी।।
सो मो पर प्रभु होऊ कृपाला। तम न साई छूटे जग ज्वाला।।

अशरण शरण नाथ रघुराई। सहज वत्सला सीता माई।।
तुम कपीश सेवक प्रभु प्यारे। मोहि राखो मन करि उजियारे।।
शरण रखो प्रभु होउ सहाई। मोरि सुनाओ प्रभुहि कदराइ।।
धरम करम न राम पद प्रेमा। बहु अभिमान न एक ऊँ नेमा।।
मन अति मोर बड़प्पन चाहा। नाथ जगत तम पुनि अवगाहा।।
बिन गुरू न ज्ञान सेवकाई। नहिं भक्ति नति सुमति दृढ़ाई।।
ताखे पुनि विनती कर जोरी। सुनहुँ नाथ प्रभु राम सनेही।।
जगकर समृद्धि विलासन चाहूँ। रामचरण रति अमित सुहाऊँ।।
शब्द जगत अति सागर खारा। मैं मति मन्द न पाऊँ किनारा।।
शब्द सार प्रभु नाम सरूपा। मणि मुक्ता बहु रूप अनूपा।।
लेन चहहुँ मुक्ता मणि चारू। जासे कण्ठ शोभ सुख सारू।।
आप कपीस सकल जग जाना। विपुल समुद्र बिन्दु करिमाना।।
नाथ दास पर राखि सनेहू। शुभमति रूप अनुग्रह देऊ।।
जासे होई हृदय उजियारा। राम रूप रस गन्ध अपारा।।
चरित कथा कर उदय सुहाई। रवि जस उगत निशा तमजाई।।
राग रूप बहु रूप पतंगा। सहज न साईं ज्योतिकर संगा।।
ऐसे ही तुम गुरूदेव गुसाई। कृपा करहु दीन अपनाई।।
दीनबन्धु सुख सिन्धु गुसाईं। करूणाकर कृपाल रघुराई।।
नाम लेत जेहि भव भय जाई। सो केवट प्रभु माँग सहाई।।
केवट पुनि अति चतुर सुजाना। जेहि मन भ्रमर रसिक रस जाना।।

राम प्रेम केवट नहिं अन्ता। जेहि लगि तप रति मति नित सन्ता।।
सो प्रभु चरण कमल जल पावा। जेहि पशुपति शिरधरि सुख पावा।।
को करि सकत निषाद बड़ाई। सीय राम जेहि प्रेम सुहाई।।
निपट गँवार मूढ़ नराधम तेहहि। पर कृपा कीन्ह करूणा करहि।।
राम भ्रात सोई कष्ठ लगाई। भाई लखन जिमि बहुत सिराई।।
मुनि वसिष्ठ ऋषि आतम ज्ञानी। राम मात पुनि परम सयानी।।
ते केवट करि भूरि प्रशंसा। पुनि पुनि उमगि प्रेमरस हंसा।।
जामे नहिं केवट हि बड़ाई। प्रभु जेहि करत सनेह गुसाइ।।
तापर सब कर सहज सनेहू। राम तजे जग करत न नेहू।।
तेहि कर चरण धरणि धरिशीषा। करहू कृपा मोहि जान अनीषा।।
राम चरण पंकज रति होई। बिनवऊँ सकल सुपासउ मोई।।
तुम प्रभु दीनबन्धु रघुराई। कृपा करहूँ प्रभु जगपति साईं।।
राग द्वेष छल कपट अपारा। कलिमल कलुष अमित विस्तारा।।
पाप प्रसंग अनेक प्रकारा। मति दूषित रति गति संसारा।।
भाव सुभाव न राम सरूपा। हृदय अमित विष राग अनूपा।।
तिन्ह कर कोटि कलुष विस्तारा। जनम करम पुनि पुनि तम गाढ़ा।।
संसृति नाश कवन विधि होई।सूझ न राह प्रकाश न जोईं।।
एक आत्माधार अनन्ता। प्रभु रखि सुधि सकल करन्ता।।
हृदय देशवसि श्री रघुराई। लीला ललित प्रकाशहू साईं।।
भगत वसल प्रभु अमित कृपाला। करहु अनुग्रह दीनदयाला।।

कलिमल हरण नाम सुखकारी। जे राखिहिं सुमिरहीं अनुहारी।।
ते सब कलि कृत दोष न साईं। जिमि रवि उदय सकल तम जाईं।।
मै मतिमन्द मूढ़ अति कामी। नहिं एहि जोग कथा सुख खानी।।
कलिमल कलुष हृदय कदराई। दीन भमित नहीं राह सुझाई।।
कर्मकाण्ड विधि अनत अपारी। नहिं विधा नति मति तम भारी।।
नहीं सत्संग विवेक न मोरें। केहि विधि हो कल्याण न ठौरें।।
सो जानत प्रभु अन्तर्यामी। प्रेम पूर हृदयी विमल अनामी।।
जीव सकल प्रभु सृष्ट अनूपा। सब सम प्रभु कृपाल सब रूपा।।
सकल हृदयवासी अविनासी। सो प्रभु जान सकल सुख रासी।।
निर्गुण प्रभु समर्थ भगवन्ता। इच्छा मात्र सृष्टि अनुमन्ता।।
सगुण रूप प्रभु धरहि सुजाना। जासु ध्यान भव सिन्धु सुखाना।।
यही इक रहा मोर अवलम्बा। सोचहुँ मन करि तर्क अनन्ता।।
राम एक भव रूज तम्हारी। नहीं अन्य मारग अन्धियारी।।
प्रभु तारे खल रूप अनन्ता। गीध अजामिल सन्त कहन्ता।।
दीन्ह परम गति राम सनेही। रावण जिन्ह हरि लान्ही विदेही।।
प्रभु सर्वग्य सरल अविकारी। जेन केन जे भज असुरारी।।
ते सब राम सनेह सुपासी। पावईं गति निर्मल अविनासी।।
मै पुनि प्रभु कर करहुँ निहोरा। प्रभु गति मोरि और नहीं ठौरा।।
करहु कृपा प्रभु आतुर जानी। कलिमल तम उर राह अजानी।।
जनम जनम अति कर्म प्रसंगा। सदा निरत मति राग अरंगा।।

विद्या चित्त बुद्धि विषय सुहाए। नर तन रतन जगत रस भाए।।
इनकर नास कवन विधि होई। सोचहु गुन-हुन पावहु ओरी।।
विद्या बुद्धि बहु ज्ञान विरागा। भक्ति रहित जस सूख तलाबा।।
एक भक्ति के रूप अनूपा। अमित लाभ मधवन धनुरूपा।।
सो अति लाभ मनुष तन पाई। भगति लाभ अतिशय सुखदाई।।
यही मार्ग मेरे मन भावा। करहुँ चरित चिन्तन सुख छावा।।
एहि कारण प्रयास यह मोरा। दीनबन्धु प्रभु करहु निहोरा।।
करहु कृपा शुभ सुभग सयाने। रामचरित रति मति अनुमाने।।
मत्त भ्रमर मन रस अति आतुर। अमित सिन्धु उर आईं भक्तिरस।।
करहु कृपा गुरूदेव गुसाईं। सेवक अधम तोरि गति साँई।।
पाई जनम जग विविध सरूपा। भ्रमित फिरूँ संसार विरूपा।।
मन अभिमान अमित अतिचारी। नाम सुधारस वन्चित भारी।।
प्रभु वरदान देहु मोहि स्वामी। होई भक्ति उर अंर्तयामी।।
नाम रूप कर अमित प्रभाऊ। प्रभु दयालु कर द्रवित सुभाऊ।।
नर तन पाई फिरूँ जग माँही। रूप शील गुण निज अनुमानी।।
धरम करम नहिं ज्ञान विवेकू। प्रभु रस विरत मनसि सन्देहू।।
शब्द जाल अति अगम वरूथा। तिन्ह महँ भ्रमित भयऊ चित रूखा।।
प्रभु तुम सरल हृदय जगसाँई। सेवक प्रति सनेह अधिकाई।।
राम कृपामय मृदुल सुभाऊ। आरत जानि मोहि पतियाहू।।
राम भक्ति सरितामृत धारा। डूब उतरि हियँ आनन पारा।।

जहाँ जब जनम पाऊँ प्रभु ईशा। कर्म बन्ध सुख दुख प्रभु इच्छा।।
पाऊँ सदा भक्तन कर संगा। जेहि जरि जाई कलेश पतंगा।।
एहि कलिकाल न धर्म सुहाई। सकल पाप अतिचर दिखाई।।
राम भक्ति मिस बहु पाखण्डा। धरम नाम संचय धन खण्डा।।
मन कलुषित अति मिथ्यावादी। नहिं गुरू पद नावहिं रतिचारी।।
तीरथ जाईं जरई विष ज्वाला। विषय चिताई नहिं दीनदयाला।।
धर्म उपदेश करहिं बहुतेरे। धन सन्चय अभिलाष घनेरे।।
कलि प्रभाव दु:ख ताप कलेषा। नहिं इच्छा प्रभु पद रति लेखा।।
धरम दिखाई हृदय नहिं प्रीति। कवि कोविद जग विषय सुप्रीति।।
अमित वेष रूप बहुरंगा। साधु फिरहिं कण लोभ प्रसंगा।।
मस्तक जठा भस्म अति भाई। वस्त्र गेरूआ मन कदराई।।
धरि शरीर सोहहिं पाखण्डा। जग अति भीति करहिं नहीं सन्ता।।
द्विज नहिं एकऊ सब विषरूपा। नहिं संस्कार न विधि नहिं पूजा।।
ब्राह्मण कण लोभी अति रागी। काम विषय रत सकल विलासी।।
नहिं उपदेश ज्ञान रसाला। नहिं विधि जान न जपहिं कृपाला।।
सन्ध्या वन्दन वेद पुराणा। नहिं सेवहिं उर उदर कराला।।
दम्भ काम रति लोलुप भारे। फिरहिं सकल द्विज बिन उपचारे।।
रामनाम मति रति नहिं एका। ज्ञान न ध्यान न सुमति विवेका।।
करिं शिर तिलक जनेऊ धराईं। जहाँ तहाँ खईं शूद्र की नाई।।
सकल शूद्र रूपी व्यभिचारी। कामातुर परनारी निहारी।।

हृदय कलुष दिन दिनहिं बढाईं। राम नाम जपि सुख नहिं मानहिं।।
एकई धर्म पेट भर जासे। नेम प्रेम यहि धन जेहि पावे।।
बहुत बोली वाणी अति सूखी। जग विषयक चर्चा अति रूखी।।
क्षण भर पाई न कोई विश्रामा। पेट लागि उद्यम विधि नाना।।
चोरी छल अति कपट सयाने। प्रेम दिखाई समर्थ जेहि मानें।।
जगत कीर्ति हित धरम घनेरे। देव प्रेम नहिं करम अहेर।।
जग कीरति मिति उद्यम सारे। नहिं भगवान हेतु तम भारे।।
जग्य आदि अनेक विधाना। उद्यम करहिं अर्थ विधि नाना।।
भगवत धर्म हेतु धन पावहिं। पुनि निज लाभ सोधि सुख पावहिं।।
प्रजा सकल तम रूप घनेरी। नहिं नितकर्म न विधि मति हेरी।।
सुत विषयक रति प्रीति दिखावहिं। धरम नीति नहिं कछु समझावहिं।।
नहिं संस्कार उपनयन एका। पेट भरे सोई कर्म विवेका।।
द्विज उद्योग शूद्र के हीना। ब्राह्मणदास वृत्तित मति दीना।।
जन्म पाई विप्रन घर आईं। कर्महीन दोई लोक न साई।।
सत्तर वर्ष आयु परिमाणा। जानत जस जे अमर सुजाना।।
जब लगि जीवहिं जगरति नाना। विरति नाम रह धर्म पुराणा।।
जुबा पुत्र जब जाईं बिआहीं। तजि पितु मातु तिया मति भावहिं।।
सदाचार पालन वृत नेमा। लोक रीति न राम पद प्रेमा।।
रामचरित गुण मुख नहिं आवा। विषय चरित सबहीं मिलि गावा।।
ग्राम्य गीत विष विषय मलीने। प्रभु चरित्र खगाईं हीने।।

मोर होत रति कथा अनेका। गीत सुनहिं परिवार समेता।।
रति विषयक चर्चा मिलि करहीं। मानहुँ स्वर्ग मार्ग अनुसरहीं।।
नर नर्तकी काम छबि भारे। जिमि भुजंग लपटाई सपारे।।
विषय भुअंग व्याप्त भई धरती। रति क्रीड़ा मति विषय अनीती।।
विविध भाँति तिन चित्र बनाई। घर आँगन जड़ि जड़ि लटकाई।।
भोर होत तन धोई नहाई। पर तन सजि जग काज निभाई।।
एक लक्ष्य जग कार्य अनेका। क्षण नहिं सेवहिं राम निकेता।।
जुबती विषयक कथा सुहाई। बड़े चाव अमृत जिमि पावहिं।।
लोक लाज नहिं कछु मर्यादा। विषय चरित प्रति घर सुनि आवा।।
धरम करम उपदेश घनेरे। जग विषयक अभिचार समेते।।
जे तजि जग राम पद सेवी। तिन्ह जानहिं मूढ़ अविवेकी।।
अर्ध रात्रि लगि विषय प्रमोदा। थकित सोई स्वप्न रतिबोधा।।
प्रात उठत निशि चर्चा लीन्हे। नहाई धोई पुनि जग जल मीने।।
जे धन पाई अपन बहु मानहिं। सोई खाई जग जनम नसावहिं।।
भजन नहीं नहि प्रभुकर ध्याना। वेद पुराण धरे सुख माना।।
जे पुनि भगवत नाम समेता। सेवहिं धरम भक्ति सविवेका।।
तिन्ह कर उपदेशहिं बहु ज्ञाना। जगत रीति समझावहिं नाना।।
ज्ञान हीन संस्कार विहीना। कथा पुरान कहें मति दीना।।
कथा कहहिं मति धन पर रहहीं। ध्यान एक धन कति विधि मिलहीं।।
श्रोता कथा विषय नहिं प्रीती। कथा बीचि चर्चा जग रीती।।

नहिं आनन्द पाई बहुताई। लोकरीति कथा सुनि आईं।।
चतुर्दिशा छाई अन्धियारी। नहिं दीपक तम केहि विधि जाई।।
मत्त भ्रमऊ प्रभु दीनदयाला। तन सुखसार जानि जग काजा।।
ऐसे में प्रभु कृपा निकेता। कृपा तुम्हारि मिले होई चेता।।

बिनु प्रभु कृपा न संसृति नासी। अखिलात्मा प्रभु सब घट वासी।।
सो जानत प्रभु दीनदयाला। अमित कृपाल दीन प्रतिपाला।।
निर्मल मन प्रभु सरल सुहाई। सर्व सुहृद व्यापक जग राई।।
राईनहिं विकार प्रभु सम्मुख जाई। नहिं छल कपट नाथ मन भाई।।

ऐसे प्रभुहि छाँड़ि जे मूढ़ा। नर तन नासई विषय विमूढ़ा।।
ते नहिं पावहिं कहिं संतोषा। नश्वर जगत विषय केहि तोषा।।
सोई भज जस मति भ्रम जाई। जगन्नाथ जेहि सृष्टि बनाई।।
सो करूणाकर दीनदयाला। सदा सरलचित्त जन-प्रतिपाला।।

मै अति मूढ़ काम बस आकुल। कर्मनिरत मति रहूँ अति व्याकुल।।
नाथ न ध्याऊँ दोष प्रभु देऊँ। कर्म अहेर विधिध पुनि रोऊँ।।
बुद्धि काम रत विषय बयारी। जग जन्जाल अगिनि बहुताई।।
तेहि तापित बहु क्षुधा पिपासा। राग रोग दु:ख नहिं कछु आसा।।

कर्म बन्ध जग जाल जनम के। पाप रूप प्रारब्ध घनेरे।।
पाई जनम पुनि पाप बढ़ाऊँ। नहिं मति ठौर न कहीं सुख पाऊँ।।
जब कोई सन्त मोहि उपदेसा। दोष दरस तम बाढ़ कलेशा।।
सदा स्वयम् अति सज्जन मानी। मति विवेक उर बहु सन्मानी।।

जे कछु मम संसार प्रसंगा। कपट बुद्धिबल चाहुँ प्रसंसा।।
सतत अगनि तापित मति हीना। करम बढ़ाई ताप पुनि लीना।।
ऐते पर यहि कलियुग माँहीं। नहिं सत्संग ज्ञान कदराई।।
छल अति कपट सयान घनेरे। केहि विधि नाथ मिटे जग फेरे।।

अनत दयाल नमोकर आसा। जनम करम तम रूप निरासा।।
अब प्रभु कृपा करहु जग स्वामी। दया करो प्रभु आरत जानी।।
आरत जन मन रह नहिं चेता। करूणा कर प्रभु कृपा निकेता।।
तुम जेहि पर पुनि होऊ कृपाला। संसृति नासि बुझे जग ज्वाला।।

नृप सुत ध्रुव मति सरल अयाना। वचन विमातु हृदय दुःख माना।।
पाद दलित चस क्रोधित उरगा। पाँच बरस ध्रुव जननी सनगा।।
तेही अति विकल जान महतारी। केहि दुःख मानि विवेक बिचारा।।
जो विमातु ध्रुव तेहि उपदेसा। जाहु पुत्र प्रभु सब कर ईसा।।

जो प्रभु सृष्टि सकल उजियारी। जो पालक निर्मल अविकारी।।
सो राख हि सुत जो सब पाला। जाऊ विमल उर राखि कृपाला।।
प्रभु आरत हर सब सुखरासी। करहि दया कृपाल अविनासी।।
मातु वचन उर रखि सो बालक। तप हित प्रभु पद गा अघघालक।।

गयहु कीन्ह तप सब सुखकारी। अल्पकाल प्रभु जन मुदकारी।।
भये प्रगट प्रभु दीनदयालो। दीन्हों उज्ज्वल लोक विशालो।।
जेहिं न पाईं जोगी अधिकारी। जन्म-जन्म प्रयत्न करि भारी।।
सो प्रसन्न बालक पर भयऊ। लोक अचल अति निर्मल दयऊ।।

प्रभु नारद तेहि भये कृपाला। जग हितकारी दीनदयाला।।
नाम मन्त्र जिन्ह ध्रुव कहुँ दीन्हा। जेहिं प्रभाव अतिशय सुखलीन्हा।।
निर्मल मन अति द्रवित दयाला। आतुर जन मन रखत कृपाला।।
सोई प्रभु करूणाकर स्वामी। दीनबन्धु उर अन्तर्यामी।।

सो राखिहि मोहि जो जग राखा। खल संहारि जो सुर हित साधा।।
नाम लेत भव-जलधि सुखाहीं। सोई केवट प्रभु सरित उतारी।।
सोई स्वामी राखिहि हित मोरा। अमिय दृष्टि जन मन चितचोरा।।
जेहि इच्छा सृष्टि उपजाई। सोई पालत सम रूप खरारी।।

सो समर्थ प्रभु बलि मख जाई। तीन पगा धरती हरि पाई।।
पुनि बलिकर सर्वस्व छुराई। दीन्हि इन्द्र करि सुरन्ह सहाई ।।
सोई पुनि बलि पर भये कृपाला। सुतल राज दीन्हें प्रतिपाला।।
जेहि ऐश्वर्य इन्द्र ललचाई। सोई असुर करि सुलभ गुसाई।।

जगत पिता श्रीपति जगराई। असुर द्वार सो करत रखाई।।
नाथ रमापति जग हितकारी। प्रथम परीछा बलि करि भारी।।
अविचल धर्म बुद्धि तेहि पाई। इन्द्र राजपद दीन्हि गुसाई।।
सुतल राज पति सो बलि जाई। आगम काल इन्द्र पद पाई।।

जो सुग्रीव दीन्ह मुख साजा। बालि मारि किये कपि राजा।।
बालि हृदय बल मद अभिमाना। मान मेटि गति दीन्हि सुजाना।।
तेहि सुत अंगद भये प्रभु प्यारे। राम दूत बनि यश विस्तारे।।
सोई प्रभु सन विनती कर जोरी।राखहु नाथ मोरि मति थोरी।।

नाथ न मोहि समृद्धि सुख आसा। चहुं न सिद्धि स्वर्ग अभिलासा।।
रामचरण पंकज रति प्रीति। आठ प्रहर गुण कीरति नीकी।।
प्रभु भक्तन शुभ संग सुहाये। राम कथा रस प्रति पल छाये।।
हृदय तिमिर जग भय नस जाई। नाम प्रताप सुमति हियँ आई।।

दो वरदान नाथ जगदाता। आरत हरो सकल सुख दाता।।
जहाँ जहाँ जनम होय प्रभु मोरा। मन रह भ्रमर भक्ति रस बोरा।।
नाम कीर्तन प्रभु कर नाना। भक्त संग शुभ सरल सुजाना।।
नाथ शम्भु त्रैलोक गुसाईं। जासु कृपा दशग्रीव सुरारी।।

अति वैभव भूषित बलशाली। बहु कुटुम्ब बहु प्रभुताशाली।।
जेहि त्रास सुर नींद न राती। सुरन्ह तियन्हि गर्भ गिर जाहीं।।
जेहि कारण राम अवतारा। निर्गुण ब्रह्म भयो साकारा।।
सो रावण गिरिजापति स्वामी। पायो बल प्रभु तुम्हहिं मनाई।।

तुम्हरी पगरज हित सुरधीषा। करहि प्रयत्न तोषहीं ईशा।।
सोई शिवशंकर दीनदयाला। कालकूट विष भीषण ज्वाला।।
सुरन्ह हेतु जिन्ह कण्ठ उतारा। किये सुखी भयो क्षरित विकारा।।
सोई शिवशंकर दीनदयाला। सकल समर्थ भक्त प्रतिपाला।।

चरणकमल जल मस्तकधारी। होई मुदित प्रभु यश विस्तारी।।
अनुपम भक्त जगत उपकारी। तजी सती जैसी प्रिय नारी।।
भक्ति भयाकुल प्रभु वृषकेतू। प्रिया छाँड़ी पाले श्रुति सेतू।।
सोई समर्थ प्रभु दीनदयाला। सुमति प्रीति मति देऊ कृपाला।।

को तर सक भव सिन्धु अपारा। नाथ जगत विष ब्याल कराला।।
भक्ति विमल मति अमित रसाई। जैसे जल ऊपर चिकनाइ।।
एहि विधि विमल बुद्धि मोहि देऊ। प्रभु कृपाल नहिं राखहिं मेऊ।।
आशुतोष प्रभु औढ़रदानी। द्वार जाई जो प्रभु सन्मानी।।
भस्मासुर प्रभु द्वार गयेऊ। तेहि पापिहिं वरदान दयेऊ।।
नीच बुद्धि प्रभुसन छल कीन्हा। जगन्मात करि कुमति मलीना।।
तेहि कर नाश रमापति कीन्हा। प्रभु आरत हर-हरि सुख दीना।।
तुम जगनाथ सुमति उर भाई। करूणाकर प्रभु भोर सुभाई।।
ते छल करहिं पाई प्रभुताई। मति दरिद्र दुई लोक नसाई।।
प्रभु समर्थ जगरूप कृपाला। भक्त द्रवित मति हृदय विशाला।।
नाथ मोरि गति करहु कृपालू। भक्ति हृदय नासहु उर ब्याल्।।
ब्याल विषय विष तुम्हहिं न व्यापा। धरे कण्ठ तिन्ह कर नहिं तापा।।
विष दूषक कण्ठ पुनि धारा। नीलकण्ठ भये जग सुख सारा।।
वैभव अमित देऊ प्रभु तेरी। जो प्रभु कर रह दास सनेही।।
वैभव पति प्रभु अमित विरागा। विषय सर्प नहिं दूषहिं नागा।।
भस्म भूष तन मदन विनाशी। अमिय दृष्टि कण्ठ विषराशी।।
प्रभु भक्तन सब काम सुपासा। जिन्ह जग जान काम कर नासा।।
करूणाकर प्रभु अमित उदारा। निज भक्तन हित सतत कृपाला।।
वाणासुर भक्त हित लागी। वासुदेव संग रण अनुरागी।।
नाथ दास कर हृदय सुहाये। सतत प्रेम भूषित छबि छाये।।

हृदय भक्ति रसाल जेहि होई। राम नाम उर आवई सोई।।
नाथ राम तव हृदय सुहाये। सतत प्रेम भूषित छबि छाये।।
जेंहि गाथारत सतत रहेऊ। सोई मम हृदय प्रकाश करि देऊ।।
जासु नाम रस प्रभु सकलेशा। गिरिजा दीन्ह अमित उपदेशा।।
जासु कथा सुनि मात भवानी। पाईं अमित तोष सुखमानी।।
जनम करम प्रारब्ध घनेरे। सुनि जस कथा सुमति हियँ हेरे।।
सोई कोसलाधीस कृपाला। मम उर रहे सदा प्रतिपाला।।
जेहि जस गाई बुझे जग ज्वाला। अमित ताप नासहिं भव व्याला।।
सो प्रभु मोहि अति आरत जानी। देहुमति विमल भक्ति रस खाानी।।
सतत कृपाल उमापति स्वामी। करहु प्रकाश भक्त बड़ नामी।।
संतत हृदय राम रस धारा। विमल नाम रति उर उजियारा।।
त्रिगुण रूप प्रभु अन्तर्यामी। करहु कृपा देहु मति स्वामी।।
हे जननी जगमात अनूपा। सकल सृष्टि पालहु जगरूपा।।
मात हृदय तब सरल सुहावा। नाम लेत भव ताप नसावा।।
जगत पाई सुख तोई उपासी। मोर हृदय अति तम भ्रमरासी।।
भ्रम तम जाहिं तोर जस गावा। जननी मम उर जग अघ व्यापा।।
तुम कृपाल शिव रति मति मोरी। करहु कृपा जननी गति तोरी।।
जासु नाम जग भ्रम तम नासा। मोर हृदय नहिं नाम प्रकाशा।।
बुद्धि विमल जननी तोहि भाई। मम मति मल दूषित जग भाई।।
मात सदा आरत-हर तोही। कहत सकल श्रुति सुर मन मोही।।

आरत भई जग सकल दुहाई। त्रास देहिं खल सुर-समुदाई।।
सुरगण आरत तोहि उपासी। मारे खल सुर विपति विनासी।।
शुम्भ निशुम्भ दैत्य बलरासी। देहिं त्रास खल अति तम राशी।।
तिन्हहिं निवारि सकल सुर तोषे। पुनि दुष्टन्ह गति दीन्हि सुपोषे।।

तुम जननी सब प्रजा तुम्हारी। नहिं कहि बेद मात उर-प्यारी।।
जे दुःख सदन पाप मति दुष्टा। तिन्हहिं दीन्हि गति अति सुख पुष्टा।।
अमित रूप अखिलात्म भवानी। तोहि सेवि मिटि जगत गलानी।।
मै अति मूढ़ न हृदय विवेका। जित तित भ्रमऊ न सुख अवलेशा।।

सकल आत्माधार अनन्ता। खोजहुँ बाहर तपित भ्रमन्ता।।
नहीं प्रयत्न करहुँ मन माहीं। देखहुँ नाहिं उर बसिर ही गलानी।।
राम सकल उर रह अविनासी। मम उर अति मलीन दुःख रासी।।
राम सकल जग कर उजियारा। मोर हृदय अतिशय अन्धियारा।।

तम प्रकाश दुई साथ न रहई। केहि विधि राम मोर उर रहइ।।
केहि विधि हृदय प्रकाशत होई। जानहुँ नहिं विधि रहि मति गोई।।
तुम माता सब हृदय निकेता। देऊ विमल मति उर सुख चेता।।
मात मोहि अति आरत जानी। करहु कृपा मति मात सयानी।।

जासे सकल अन्ध हुईनासा। होई सरल चित्त हृदय प्रकासा।।
जेहि प्रभु विमल प्रकाश स्वरूपा। मम हृदय बसै रूप छबि भूपा।।
मात तोरि मति हृदिं विपुलाईं। कृपा करहु जग जननि सुहाई।।
सो मोरे शिर निज कर कंजा। धरहु मात जेहि होई सुख पुंजा।।

अखिल आत्मा पोषण हारे। बसहु नाथ करि हृदय सुखारे।।
जासे प्रभु यश विमल पताका। राम हृदय रह दीप शलाका।।
नाथ कोशलाधीश कृपाला। जन मन हरण सकल सुखसारा।।
धरहु नाथ कर कंज सुजाना। मति रति विमल चरित्र सुहाना।।
जग जननी सीता वर देहू। अमित ताप मेटहु मति देवहु।।
जगन्मात जग सकल सरूपा। गिरिजा मात रहहु सुख रूपा।।
श्री शिव शंकर जगत गुसाईं। नाथ मोरी गति करहु सहाई।।
सकल मनाऊँ दोई कर जोरी। हरहु नाथ मम जगमति खोरी।।
राम नाम सुख सार अनन्ता। जेहि सेवहिं मुनिवर शुभ सन्ता।।
सो प्रभु ममकर हृदय सुवासा। जासु सकल अमृत विधि वासा।।
आठहूँ प्रहर नाम जप होई। बुद्धि विमल वर माँगऊ सोई।।
प्रभु सब रूप व्याप्त जग एका। रहे सुमति रति विमल विवेका।।
करूणासिन्धु सकल भर्तारा। नाथ गहो मम हाथ कृपाला।।
दीनबन्धु करूणाकर स्वामी। वास करो उर अर्न्तयामी।।
सकल सृष्टि जग रूप सरूपा। अमित रूप अमिताभ अनूपा।।
सो सब सुहृद सकल सुर स्वामी। मोही सम दृष्टि देहु अविकारी।।
जो जगजाल रूप अविवेका। जल इव कमल सुविमल विवेका।।
एहि विधि मम रह हृदय विशाला। दीनबन्धु प्रभु रहहु कृपाला।।

करूणायतन प्रभु दयाधाम निवारि तम मम हृदय के।
करि कृपा बसि मम उर सदा सुप्रकाश करि प्रभु चरित के।।
प्रभु चरित अमृत सिन्धु संतत उर बसे करूणानिधि।
जेहि करऊँ पान सुनाम जिह्वा सतत क़ीर्तन शुभमति।।
कलिकाल व्याल कराल आकुल सकल धरणी तम घना।
प्रभु जगद्द्रुम ललाम कीरति गान क़रं नित शढ़मना।।
जे अमित खल तारे सम्हारे सकल काज सुजंन सखा।
तेहि ध्याई मन सुख पाई निर्मल गति सुशोभित सुखमना।।
जे जनक जननी जगत पालक सर्व रूप उनादि है।
जे सर्व शुभ चिन्तक कृपामय अखिल विश्व प्रकाश है।।
जिनकी कृपा से सर्व सुख मंगल सदा अभिराम है।
उन अखिल विश्वात्मक प्रभु को सर्व रूप प्रणाम है।।
प्रभु त्रिगुण रूप स्वरूप शिवशंकर तथा गिरिजा सती।
जे जगत त्राण विधाई स्वामी जगन्मंगल सुख रती।।
जे कालकूट विषाक्त सुरजन ताप निवार सुखी किये।
प्रभु नीलकंठ दयाल स्वामी विरतमति मंगल करें।।
जिसकी कृपा से सृष्टि क्रम यह सर्व सुख साधन क्रिया।
अविराम गति चलते निरंतर मात सीता शुभधिया।।
जो जगन्मंगल कार्य रत नित जगन्मात हरिप्रिया।
नित नौमि पादाम्बुज मनोहर सर्व रूपमयी सिया।।

जे बुद्धि विद्याशील निधि श्रीराम काज करें कपी।
रूची दीन्हि लंका जार खल दल सीता सुधि लही।।
संजीवनी लाये मनोहर कालनेमी निवारि के।
पाये विमल वर मात सीता सनमती प्रभु रति करें।।

तुलसी करे कल्याण जग को रामचरित सुहावने।
मानस करें अति सरल कविता सर्व जन मन भावने।।

अन्य ग्रन्थ समूह संस्कृत भाषितम यद्यपि शुचि।
सार भाष चरित सरिता करि प्रवाहित म्रद दिये।।

तुलसी चरित अति शुचि मनोहर जन्म लेहि जग हित भये।
राम रूप विचित्र निर्मल यश सुभावन जग किये।।

प्रभु चरित कोमल शब्द भाष विशाल अर्थ सकल हिये।
आवहिं सकल जन होत हर्षित गाई चरित्र सुहावने।।

कलिकाल अन्ध विशाल व्यापित दुःखित जन मन विषय के।
कर्मकाण्य प्रकाश नहिं कलिकाल कर्म विषय भये।।

पूजा रचा विधि तन्त्र शास्त्र न ज्ञान कलि व्याकुल करे।
यहि नाम केवल शब्द ब्रह्म अनन्त जेहि जपि सुख लहे।।
यहि समझि मन रखि नाम सुख चित चरित शुचि भगवान के।
यद्यपि न मति रति रामपद नहिं बुद्धि विष अभिमान के।।

प्रभु सकल आतम रह सदा शुचि मति विमल करिहे शुभा।
यहि एक साधन जानि मन प्रभु चरित माखे रति प्रदा।।

दोहा : जो चाहे कल्याण अति रामचरित यश गाई।
जग कारण लीला कथा पाई सुमति भव जाई।।

जग के सार असार सब राम कथा सुख सार।
प्रभु करूणाकर सुखनिधि तुरत करे उद्धार।।
राम कथा पावन विमल अति अनन्त विस्तार।
निज मानस मल धोइबे अंश रूप सुख सार।।
अंश रूप सुख सार नाम महिमा अति भारी।
कहे सुने सो पाये कीरति मति प्यारी।।
कहे "कृष्ण को दास" सुधा को रस बरसाई।
राम सीय जो भजे अमित भव सिन्धु सुखाई।।
कथा राम की आदि कवि श्री बाल्मीकि सुजान।
लिखे चरित जस विमल अति गावहिं वेद पुराण।।
गावहिं वेद पुराण मति तुलसी ने पाई।
गुरू से प्रेरित भये हृदय छबि राम सुहाई।।
कहे "कृष्ण को दास" सोच **तुलसी ना होतो**।
तो का होतो या कलजुग में **कलि क्यो रोतो**।।
मै मति मन्द गवाँर नाम को रस नहिं जानूँ।
भाषा सुमति विवेक छन्द को भेद न जानूँ।।

जानूँ जग भरतार सकल बुद्धि के दाता।

जे ध्रुव दीन्हों ज्ञान बुद्धि शुचि सम्मति दाता।।

कहे "कृष्ण को दास" ज्ञान जगबन्ध छुरावे।

जो भजले भर्तार वाही को ज्ञान सुहावे।।

बुद्धि विमल रसना वही जामे प्रभु को नाम।

सबहिं सन्त मुनिजन कहीं गावे वेद पुराण।।

गावे वेद पुराण जगत को ज्ञान अधूरो।

राम नाम नहिं जान काहे को पन्डित पूरो।।

कहे "कृष्ण को दास" नाथ से विनती मोरी।

सेवक राखियो नाथ दास की जगमति खोरी।।

जीवनदाता वर दो ऐसा___

ऐसा वर,दो जीवनदाता चरण कमल पर ध्यान रहे
क्रोध लोभ अभिमान जीत लूँ सतत भक्ति भगवान रहे
प्रभु चरणों दृढ़ निष्ठा ही जीवन का उद्देश्य रहे
प्रभु पदकमल मुदित जनसेवा यही लाभ आनन्द रहे {1}

लोभ एक मेरे मन में प्रभु तव पद रति का रतिप्रद रहे
मोह सदा मन में प्रभु छवि का दीन दयाल कृपाल रहे
काम यही प्रभु भक्तगणों में प्रीति सदा होवे मेरी
क्रोध यही प्रभु माया तेरी सदा सदा भय त्रस्त रहे {2}

कितना जीवन बीता स्वामी केवल विषरस ग्रहण किया
भवन पुत्र भव-विभव युक्त हो महा गरल का पान किया
हुए विमोहित अज और नारद अज्ञ जीव मैं क्या जानूँ
केवल शरण एक प्रभु तेरी दृढ़ संबल से तर जाऊँ {3}

यद्यपि क्षण भंगुर मानव तन किन्तु महा मंगलदाता
सतत भजन रतन धन सुन्दर राग रहित भज जग त्राता
दीनानाथ सदा करूणाकर आरतहर सबके स्वामी
जग की विपदा से तारेंगे रमारमण अन्तर्यामी {4}

मेरा स्वामी परमपिता जग का रक्षक सबका त्राता
दिशा काल की मर्यादा से रहित सदा सबका दाता

सभी जगह जो व्याप्त सतत है चिदानन्द सबका प्यारा
नहीं अन्त जिसका वह ईश्वर ही तो है सबका भ्राता {5}

जिसका प्रमाण अनुभव जिसका केवल उसका ही अनुभव है
सतत शान्त निर्लिप्त महेश्वर परमपिता परमेश्वर है
मानव जीवन वह धन्य हुआ जो जगदीश्वर का सेवक है
नमन सदा मेरा उसको जो शान्त दिव्य करूणाकर है {6}

जो जग को रचकर प्रति अणु में जीवन ज्योति जगाता है
जो कण कण का जीवन धन हो प्रेम सुधा बरसाता है
प्राण रूप जो प्राणीमात्र में गुणातीत सुख राशी है
जगन्नियन्ता करूणा सागर परमेश्वर अविनाशी है {7}

सदा सर्व-रस तथा सर्व-गत त्रिगुण रूप से जो ईश
विश्व भरण पोषण में तत्पर निष्किन्चन जन प्रिय लक्ष्मीश
शुचि सुन्दर सुस्मित कटाक्ष से जो जग का तारणकर्ता
जगत पिता वह एक ईश ही करता पालक संहर्ता {8}

भुजंगराज शोभित तन सुन्दर शुभ मयंक भूषण धारी
अमय करामृत दीन कृपाकर जन मन रंजन भय हारी
जटाजूट शुभ गंगामृत धर भस्म विभूषित तन धारी
त्रिगुणरूप स्वामी शिवशंकर डमरूधर औघड़ दानी {9}

निर्गुण ब्रह्म निखिल जगनायक जो मनबुद्धि ध्याना गम्य
ध्यानावस्थित जोग जानित साधन द्वारा ही अनुभव गम्य

वही अखिल ब्रह्माण्ड सृजेता सगुण रूप पर हरि स्वयम्
ब्रह्मा विष्णु महेश रूप से योग-क्षेम वहति सततम् {10}

है विष्णो है शिवशंकर प्रभु दानि शिरोमणि जयकारी
संसार मार्ग के भ्रमित पथिक को ज्ञान चक्षु: दो अज हारी
बाँह गहो हे स्वामी दयामय भवनिधि से दो त्राण प्रभो
अयुत जन्म के कर्मचक्र से उद्धत करलो नाथ विभो {11}

नाथ तुम्हारी माया का यह चक्र सदा चलता रहता
जीव मोह में उलझ उलझकर कर्म-व्यूह रचता रहता
तुम ही साधन तुम ही साधक एक तुम्ही मंगलकारी
कृष्ण-दास प्रभु शरण तुम्हारी लाज रखो गज भय हारी {12}

❄ ❄ ❄

त्रिकाल सध्या

ग्रहण किये गुण सत्व रजस्तम जो र्निगुण है सदा समान
बने रूपधारी पुरूषोत्तम उरपति स्थिति प्रलय सुजान
कर्ता भरता और प्रलयान्तक त्रिगुण रूपधारी भगवान
ब्रह्मा विष्णु तथा शिवशंकर कोटि कोटि है उसे प्रणाम {1}

हृदयासन पर सदा प्रतिष्ठित अर्न्तयामी सदा अनाम
चर और अचर सभी जीवों में जीवमात्र में अन्तर्मान
जो है प्राप्य बुद्धि ज्ञान से यही बुद्धि का विषय प्रधान
जो अनंत महिमा का सागर सर्व रूप से उसे प्रणाम {2}

जो करता है दान प्रेम का सत्पुरूषों का सदा अनन्त
तथा दु:ख का हर्ता बनकर देता है जो परमानन्द
वही सदा करूणानिधि स्वामी दुष्टजनों को भी सततम्
मोक्ष मार्ग का सदा प्रणेता बनता है करके भी अन्त {3}

परमहंस आश्रम के सेवी सन्मार्गी हो जो र्निद्वन्द्व
करूणावरूणालय स्वामी ही देते उनको वान्छित फल
सचराचर में विश्वमूर्ति जो विश्वरूप में विश्वम्भर
शतश: उसको नमस्कार जो र्निविभेद है सर्व विभव {4}

सदा सर्व ऐश्वर्य विभूषित नहीं सत्व है कहीं समान
हो सकता है अधिक कौन जो उस अखण्ड से ह़ो बलवान

ब्रह्मरूप ऐश्वर्य-प्रणेता ऐश्वर्याधिप तथा महान।
निज स्वरूप में रमण करे जो उस ईश्वर को सदा प्रणाम।। {5}

जिसका दर्शन कीर्तन जिसका और मनन वन्दन शुभकाम।
तथा श्रवण और वन्दन जिसका पावन पावक स अभिराम।।
सर्व पाप से मुक्त सद्य ही जीव जहाँ पावे विश्राम।
नाम रूप अमृत अधनाशक बार बार है उसे प्रणाम।। {6}

निर्विवाद यह सत्य सत्य से जो रहते प्रतिपल प्रतिरूप।
जीवन के उस परमसत्य से हो जाते तादात्म्य स्वरूप।।
बिना परिश्रम कर्म-बन्ध को जीर्ण-शीर्णकर मंगलरूप।
परम पुरूष के पार्षद बनते आत्मरूप हो सत्यस्वरूप।। {7}

नहीं समर्पित कर्म जिन्होने किये अधोक्षज को पलक्षण।
यद्यपि परम मनस्वी दानी तथा तपस्वी मन वच क्रम।।
बड़े यशस्वी तथा मन्त्रवित् और सदाचारी प्रतिदिन।
प्राप्त नहीं कल्याण मार्ग वे कर पाते हैं साधु सुजन।। {8}

कर्माकर्म शुभाशुभ केवल कर्ममार्ग अभिभावक है।
किन्तु समर्पित कर्म जीव को सदा सर्व शुभदायक है।।
कर्म ग्रहण कर भव-भय-हारी सद्य कर्म का शामक है।
कर्म हुताशन रूप वन्द्य ही सहज-रूप प्रतिपादक है।। {9}

निम्नस्तर पर कर्मबन्ध से जन्म जिन्होंने पाया है।
किन्तु साथ में ब्रह्म रूप में भक्तिज्ञान भी पाया है।।

वे भी यद्यपि कर्मभोग से तृप्त किन्तु आल्हादित है।
क्यों कि भक्त-भय हारी जगदीश्वर सर्वश्रेष्ठ अभिभावक हैं।। {10}

जो ज्ञानी हैं आत्मरूप हो नारायण उनका सर्वस्व।
और भक्तगण निर्भय होकर प्रमुदित हैं उनके आश्रित।।
कर्मकाण्ड कर्ताओं में प्रभु वेद मूर्ति हैं ऋषि स्वरूप।
तपोमूर्ति हैं सत्वभाव से तप:पूत आत्मा का रूप।। {11}

शिव ब्रह्मादि अनन्त शक्तियाँ जो ईश्वर के ही प्रतिरूप।
नहीं थाह पा सकते जिनको ब्रह्म सदा आश्चर्य स्वरूप।।
उसी ब्रह्म को स्वामिभाव से भजते हैं आनन्द स्वरूप।
कृपा प्रसाद अनुग्रह पाने उत्कन्ठित रहते अनुरूप।। {12}

रहे प्रसन्न सदा मुझ पर जो लक्ष्मीपति सदा महान।
भोक्ता भी जो यज्ञकर्म का फलदाता भी श्रेष्ठ सुजान।।
सर्वान्तिर्यामी जन-रक्षक जो पालनकर्ता शक्ति प्रधान।
पृथ्वीपति जो यदुकुल भूषण सात्वत-रक्षक अभिनवमान।। {13}

विद्वज्जन चिन्तन से प्रतिपल कृष्ण रूप में भावित हैं।
क्योंकि चिरन्तन सत्यरूप में शुद्धबुद्धि अनुभावित हैं।।
साधक साक्षात्कारिक होकर परमपिता परमात्मा से।
लाभ प्राप्त करते जीवन का गुणवर्णन की महिमा से।। {14}

नमस्कार उस अनुपम प्रभु को ब्रह्मा से जग सृजन कराया।
और शारदा को प्ररित कर वेद ज्ञान अनुभूत कराया।।

तत्वज्ञान से परिचित करती कर्मकाण्ड के माध्यम से।
नृत्य कर रही शारदमाता विश्वम्भर के प्रांगण में।। {15}

हे जीवन के कर्ता-स्वामी सुन लो मेरा आत्म निवेदन।
जन्म जन्म से भटक रहा हूँ माया से होकर आच्छादित।।
करो प्रकाशित हृदय देश को स्रोत शक्ति का दो मुझको।
तत्वज्ञान की शक्ति अखन्डित भक्ति समन्वित दो मुझको।। {16}

मन में रम जाओ जगदीश्वर हृदयासन स्वीकार करो।
कर्मबन्ध विच्छिन्न करो प्रभु भक्ति-भाव स्वीकार करो।।
वरदायक भगवान दयानिधि सतत भक्ति का वर देकर।
ताप निवारक भक्ति रसामृत **कृष्णदास** को दो ईश्वर।। {17}

नाम रसामृत सिन्धु समन्वित निष्किन्चन बनकर जग में।
हरिभक्तों का आश्रय लेकर लीला चिन्तन हो मन में।।
हे प्रभु तेरी इस सृष्टि में तेरा ही बस दर्शन हो।
नाम रूप गुणगान प्रेम ही व्यक्त रूप हो परमेश्वर।। {18}

प्रभात स्त्रोत

प्रभु जागिये करूणानिकेतन भोर की बेला भई
अरूण सारथि रथ सुशोभित दिवस नाथ प्रभा नई
प्रभु नील पंकज गात सुन्दर पंकरूह द्दग सोहईं
करि कृपा दृष्टि विलोकिये प्रभु दास कीरति गावहीं
प्रभु जगनिवास दयालुस्वामी सृष्टि जेहि इंगित नई
जग रचई माया नित नवल छबि भक्त मुद जस गावहीं
सो जगतपालक प्रभु गुणाकर सतत रक्षक नभ मही
सोई दीनबन्धु दयालु स्वामी मातु पितु सब कर अही
जो प्रभु अनामय अगुण सगुण अरूप रूप अनूप ही
अनुपम अनादि अनन्त प्रभु गुण साज सजहि मुदावही
प्रभु जगतहित जन मन दिवाकर विमल श्रुति पथ रक्षही
धरि रूप सुन्दर जनम जस जग भक्त कीरति गावहीं
जन मन दिवाकर रूप छबि जे हृदय कमल सुवासहीं
जेहि गाई सुखधाम सुन्दर सुखद गति जन पावही
सोई लीला तनु मनोहर रसिक आयत लोचनम्
नौमि नित जगन्नाथ जगन्निवास भव भय मोचनम्

माँ वाणी

वीणा वरदायिनी माँ वरदायिनी आय बसहु मन मन्दिर माँही।
प्रभु चरित्र रस गावहुँ माता वाणी शुद्ध करहु हियँ आई।।
भक्ति न ज्ञान न सत्संगति है अधमाधम छल कपट सुहाई।
कृष्णदास प्रभु कीरति को सुख देहु मात जेहि भव भय जाई।।

है स्वामिनी वृषभान लली पद किंकर कहुँ शुभ मति देवऊ।
आस भरोसो सदा तुम्हारो मोहि दीनदयाल की पद रति देवऊ।।
ब्रह्मादिक सब देव शिरोमणि करूणाकोर के लोभ को आतुर।
तुम माया भगवान कृष्ण प्रभु दीन को नाथ को दास बनावहु।।

हे रूक्मणिमाता जगजीवन पालिनी माँ जगजननि अनादी।
नाथ के साथ सदा सुख साज सजाइके राजहु अंग सदाही।।
देह धरी प्रभु संग जगत हित देव करहिं स्तुति मुनि झारी।
कृष्ण को मान बनावहुँ किंकर चरणाम्बुज रति को अधिकारी।।

हे माता तुम दीनदयाल की कीरति ध्वजा सतत अर्धांगिनी।
दास के मन महुँ भक्ति जगावहुँ नाथ को किंकर जानके भामिनि।।
नाथ प्रताप से क्लेश कटें सब जेहि कीरति जग सकल सुहाई।
सोई जगनाथ की प्रिय सतभामा करहुँ कृपा जेहि भव भय जाई।।

" श्री सूर्य "

मन और बुद्धि की गति के आप सदा निर्णयक हो
काल प्रमाण सप्त जग पालक रात्रि दिवस पल की गति हो
चर और अचर सृष्टि के जीवन तेज प्रताप पुन्ज स्वामी
नमस्कार प्रभु सूर्यदेव को ग्रहनायक अविनाशी हो

" चन्द्र"

नाथ जगत को शुभ्र किरण की आभा से परिपूर्ण किया
औषधि जीव जगत का पालन अविरल रूप अनूप किया
अमृत स्राविनि किरण आपकी शीतल जीवनदायी है
मन को स्थिर करो नाथ मन मन्दिर के अधिकारी हो

" मंगल "

मंगलकर्ता श्रीमंगल हे धरापुत्र बलनिधि बलवान
ऋण हर्ता सामर्थ्य प्रदाता रक्तवर्ण यश शौर्य निधान
नाथ आप अनुकूल रहें तो तेज पुन्ज नर-वीर बने
कृष्णदास को वर दो स्वामी भक्ति भाव की सुधा बहे

“ बुध ”

हे बुध सौम्य शक्ति के दाता ग्रह पीड़ा हर विष्णु स्वरूप
धान्य पुत्र सुख सम्पत्ति दाता गुणवत्सल करूणामय रूप
नक्षत्रनाथ ज्ञानी चन्द्रात्मज रौहणेय हे दयानिधान
कृष्णचरित जस अभिमत सुन्दर गाऊँ कृपाकर दीजिये ज्ञान

“ श्री गुरू ”

सुरगुरू सुरपूजित जगपूजित नीतिकार नीतिज्ञ सुजान
ग्रह पीड़ा हर सुधादृष्टि प्रभु करूणाकर बागीश महान
जगवन्दित हे ग्रहाधीष प्रभु **कृष्णदास** को दो वरदान
करूँ प्रभु की गुणगाथा का अनुपम तथा मनोहर गान

“ श्री शुक्र ”

हे भार्गववर हे असूरपूज्य हे तप: पूत शुभ सहज सुजान
जीवनी विद्या हृदयस्थित कर बने असुर गुरू कृपानिधान
नाथ वृष्टिकर्ता शुभ करता श्रुति आगम के ज्ञाता हो
कृपा करो हे शुक्र दयानिधि कृष्णभक्ति का वर देकर

"शनि"

है रविनन्दन शौरि शनिश्चर देव दनुज मानव गंधर्व
विषमस्थित यदि आप रहें तो मति सबकी हो जाती खब
किन्तु नमन करते जो प्रभु को हे अन्तक श्री प्रभु महान
पीड़ा हरते जीवजगत की कृपया दीजिये मुझको ज्ञान

"श्री इन्द्र"

हे शतयज्ञ भजन कर प्रभु का बने स्वर्गपति शक्ति प्रधान
किये प्राप्त नूतन वैभव वरदायक प्रभु से अविराम
देव शिरोमणि अमरावतिपति शचीपति श्री इन्द्रमहान
भक्त शिरोमणि कृपा कीजिये विमल भक्ति दीजिये श्रीमान

"अग्नि"

जगपावन जगजीवन दाता अमित तेज श्री अग्नि महान
आप हुए उत्पन्न प्रभु के मुख प्राप्त किया सम्मान
सर्व व्याप्त जगपातक नाशक प्रभु हुताशन कृपानिधान
कृष्णदास को पाप भस्म कर भक्ति दीजिये सहज सुजान

"श्री यम"

श्रीयम दक्षिण दिशि के स्वामी धर्मराज यश शक्ति प्रधान
कर्माकर शुभाशुभ ज्ञाता सर्व जीव शासक श्रीमान
दीजिये नाथ हृदय श्री पति रति सहज भक्ति का अविरल श्रीमान

"श्री नैऋत"

नैऋत दिशि दिक्पाल कृपाकर पाप बुद्धि का नाश करो
जगनायक प्रभु के चरणों की कीरति गान विमल वर दो
मानव तन को पाकर भी जगमाया जाल नचाता है
करूणाकर की यश गाथा से भव बन्धन कट जाता है

"श्री कुबेर"

हे कुबेर लक्ष्मी धन कीरति सर्व सम्पदा के स्वामी
मानव तन का लाभ प्राप्त हो कृष्ण भक्ति दीजिये स्वामी
उत्तर दिशि के स्वामी दयामय जन्म कर्म जब जैसा हो
कृष्णदास के मन मन्दिर में सर्व प्रतिष्ठित श्रीपति हो

"श्री शंकर"

श्री शंकर हे ईश दयामय पाप बुद्धि का नाश करो
सत चेतन घन आनन्द दाता नाथ भक्ति का दान करो
स्वच्छस्फटिक आभ तन स्वामी विधादायी है भगवन्
कृष्णदास प्रभु भक्ति विमलवर उर मन्दिर दे दो चिन्तन

हे अनन्त जिसकी आभा में सर्व क्रिया प्रतिभासित है
क्रिया कर्म गुण काल चराचर चेतन जिसके बल पर है
जो अनन्त महिमा का सागर गोगोचर सर्वथा परे
अणुकण चेतन काल अवस्थातीत नाथ का साथ रहे

ईश है अनादी आतपवादी को दिखाई देत
रूप की राशि अरूप जो कहाई है
चक्षु: में प्रकाश प्राण जीवन्ह में दिखाई देत
कण-कण में राजे अनोखी प्रभुताई है
भक्तन को सहारो अभक्तन को भी नाथ प्रभु
सदा शांत निर्मल अविनाशी अविकारी है
कृष्ण को नाथ दु:ख भन्जन दयालू विभू
नाम को सहारो जाको अविचल गतिकारी है

प्रलय हुआ कल्पान्तक केवल परम ब्रह्म ही शेष रहे
तत्व समन्वित ब्रह्मा भी जब सर्व रूप अवशेष हुए

पुनः ब्रह्म की सृजन शक्ति से महत्तत्व उद्भूत हुआ
मात्रा पंच अग्नि जल प्रथिवी वायु तथा आकाश हुए
तीन महागुण सत्व रजस्तम अहंकार मन सृजित हुए
नाभिकमल फिर प्रगट हुआ जिससे तीनों लोक हुए
और चतुर्भुज विश्व सृजेता ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए
चौदह भुवन सजीव चराचर सूर्य चन्द्र सब सृजित हुए
जिसके बल से अखिल सृष्टिक्रम ब्रह्माजी का चलाता है
अखिल लोक लय जिसमें होता ब्रह्म सनातन की जय हो

ईश को प्रताप देख मानी को मान दियो
सेवक की सेवा स्वीकारे तन मन की
मन जो भावे समझ देख चौरासी
दु:ख को सागर है विचारे जो अन्त की
मानव यो तन है रतन याको जो साध जो रखे
हीरा को माझे द्युति भासे है अनन्त की
वृष्ण को नाथ सदा करूणा को सागर है
शरण जो जाए मन से तो सुधरेगी अन्त की
त्रिभुवन जो कोटि-कोटि इच्छा से सृजन करे
भीतर भी बाहर भी अनन्त गति जाकी है

वायु में प्रवाह तेज अग्नि में विराजे जाको
सूरज को प्रकाशजान अंश कला जाकी है
मानव-तन पायो इतरायो प्रभु कृपा देखि
बाढ़ो अभिमान गति अन्त की बिसारी है
चेतरे कृष्ण नर जीवन क्षण भंगुर जान
भज ले अनन्त नाम दीन को सहाई है

❄ ❄ ❄

आत्मा अमृत

सब कारण के प्रभु गुण रहित सदा शुभ ज्योति स्वरूप
अनिर्वाच्य निष्क्रिय अविनाशी शुद्ध सत्व हो ब्रह्म स्वरूप
क्रिया विशेषण रहित प्रकाशक सर्व बुद्धि के हो भगवन्
र्निगुण भी गुण स्वीकृत कर आकार ग्रहण करते ब्रह्मन {1}

कल्पान्तकाल में ब्रह्माजी भी लीन आप में हो जाते
क्रिया सहित यह लोक कल्पना तत्व समन्वित खो जाते
महत्तत्व से अहंकार फिर पंचतत्व उद्भूत हुए
सभी प्रकृति में लीन हो गए एक आप ही शेष रहे {2}

रूप काल गुण क्रिया रहित प्रभु शेष आप ही हैं स्वामी
विष्णु रूप जग पालनकर्ता सुहृद सखा अन्तर्यामी
सर्व सहायक आप प्रकृति के क्रिया रूप जगकर्ता हैं
लव निमेष पल वर्ण रूप से काल रूप संहर्ता है {3}

सर्व अधिष्ठित काल रूप जो स्वयम् क्रिया शक्ति द्वारा
चेष्ठा जग की स्वयम् चलाते अणु कण में जड़ चेतन की
आप सभी में सदा प्रतिष्ठित शक्तिरूप प्रतिपादित हैं
शव समान यह जीव प्रभो यदि नहीं आपसे भासित है {4}

नाथ जीव यह मृत्युग्रस्त अति त्रसित भटकता रहा सदा
चौदह भुवन सतत भरमाया काल व्याल भय व्याप्त रहा
सप्तलोक पाताल स्वर्ग भी इतर और क्या कमी कहीं
प्रभु आश्रय के बिना जीव हो सका नाथ निर्भीक कहीं {5}

नाथ आपकी शरण ग्रहण सुख सार सदा मंगलदायी
कालचक्र जिसका आयुध है उसकी छाया अमृतदायी
जीव आपकी शरण ग्रहण कर सुख शय्या पर सोता है
काल व्याल पर विजय प्राप्त कर नित्यानन्दित होता है {6}

यह कलिकाल बुद्धि भ्रमकारक सर्व क्रिया विष विषयमया
हृदय सदा कलि कलुष पूर्ण है दृष्टि सतत गुण दोषमयी
दम्भ मोह भय द्वेष असूया छल और कपट भरा उर में
मोह भ्रमित चित राग रोग से पीड़ित अति खोया जग में {7}

नाथ आपका वरद हस्त इस पीड़ित मस्तक पर रख दा
कृपा अनुग्रह दयाधाम का प्राप्त करूँ स्वामी वर दो
सार्थक हो जाऊँ जगस्वामी कृपा करो हे नाथ विभो
कृष्णदास के स्वामी दयामय अशरण शरण दयाल प्रभो {8}

कृष्णमय यह जग

हृदय में जब स्त्रोत फूटे कविता की सरिता को
आनन्दित हो कृष्णचरित कण्ठ से निकारिय
जीवन के सहारे कृष्ण राधा की मूरति हृदय
प्रीति से बिठाई जग जीवन भुलाइये
मन में आनन्द रहे आनन्द निधि साथ रहें
दु:ख को बेड़ा कृष्ण नाम में डुबाइये
कृष्ण के भाग जो कविता को अमृत मिले
संसारी ज्ञान छोड़ कृष्ण नाम गाइये {1}

प्रेम की तरंग उठे तो गाइये प्रेम निधि
राधा के प्रेम के पयोधि में नहाइये
गंगाजल धरती को अमृत देह शुद्ध करे
नाम के अमृत मन निर्मल बनाइये
आये जो विराग राग जीवन जग जाल छोड़
नाम को रस चाखि वाणी सरसाइये
कृष्ण के भाग जो मिले अवकारी सन्त
चरण की धूलि सदा माथे लगाइये {2}

कृष्ण नाम अमृतनिधि कृष्ण प्रिया सारमान
राधाकृष्ण जुगल जोड़ी हृदय में बिठाइके

कृष्ण को सहारो मिले और क्या चाहे जीव

जीवन की नैया को खिवैया बनाइये

राधा जो प्यारी दुलारी वृषभान लली

वाणी से राधा की कीरति गाइये

वाणी से गान करे हाथन सो काम होय

मन में राधाकृष्ण को सुमिरन सजाइये {3}

जीवन यो पाये रतन काहे वृथा मान करे

मानी को मान प्रभु भान में तिराइके

व्यथा करे जीवन में संसारी समृद्धि हेतु

कृष्ण की कथा व्यथा जग की भुलाइये

छोड़ रे मानुष मन अज्ञान को मूढ़ भाव

हृदय के किवार खोल ध्यान तो बिठाइये

ऐसो करो **कृष्ण** यो मानव तन रतन माँझ

भक्तिरस आभा की चिन्तामणि सजाइये {4}

देवसत है

देव सत्य है वास सत्य का सत्यजगत का भास दिखाता
जगनिवास का वास जगत के कार्य सत्यं जैसे दिखला
सर्वरूप है जीवन स्वामी कण कण आप विराजे है
और आप की भक्ति द्रवित मन शुद्ध बुद्धि सुख साजे हैं

संसार वृक्ष अनादी है यह दो फल तीन मूल वाला
रस हैं चार पाँच हेतु हैं छ: स्वभाव इसकी काया
सात छाल आठ शाखाऐं नव हैं द्वार पर्व दश है
ब्रह्म जीव दो पक्षी रहते जो साक्षी फल भोक्ता है

अक्षर ब्रह्म एक जो स्वामी सर्वाभासित सर्वस्वरूप
चिदानंद आनन्दराशी दीनबन्धु अखिलात्मक रूप
निर्गुण निखिल जगत्कर्ता जो सहज सुजान अनुग्रह रूप
और जगत के पालनकर्ता जगनायक हैं विष्णु स्वरूप

संसार वृक्ष सनातन है उत्पत्ति स्थान आप इसके
और आपमें ही लय होता सकल रूप अविनाशी में
आप प्रभू पालक हैं इसके सर्वरूप में विद्यमान
भिन्न दृष्टि जो रखते स्वामी अविवेकी की यह पहचान

है स्वरूप बहुरूप प्रभु के कौन पार पा सकता जो
गुणातीत प्रभु सर्वेश्वर के गुण ग्राम गा सकता जो
सर्वातीत अगोचर गोचर सहस्त्रपाद जो पादरहित
सहस्त्रशीर्ष अनवद्य प्रभु साकार और आकार रहित

ज्ञान रूप आत्मा सब जगकी जगकल्याण हेतु स्वामी

धारण करते विविध रूप प्रभु भक्तों के आनन्दकारी
और रूपों से भगवन् दुष्टों के नाशक भी हैं
भ्रमित बुद्धि क्या समझे स्वामी जिनको जग सुख राशि ह
तति धन्य सन्त जिनके मन भ्रमर रसिक रस आनन्दित
बहुत भक्त पाए सुख स्वामी निष्किन्चन निर्मल होकर
भक्तों के वान्छातरू स्वामी कमल नयन है दयानिधे
भक्ति प्रसाद लाभ जो पाता भव सागर को पार करे
क्या वे प्राप्त करेंगे ब्रह्मन् वृथा परिश्रम जो करते
बिना प्रभु के चरणाश्रय के विविध साधना जो करते
बिना आपकी भक्तिलाभ के व्यर्थ साधना लोक क्रिया
यद्यपि उच्च लोक तो पाते गिर जाते अविवेक धिया
और आपके भक्त जगत को लाभ सदा देते स्वामी
सर्वरूप में सर्वेश्वर को सतत देखते जो स्वामी
नहीं चाहिये भक्तों को अपर लोक के सुख भगवन्
उनका हृदय मुदित मन आतुर भक्त भ्रमर चरणावर विन्द
सरल हृदय सर्वात्मक स्वामी भक्त सदा निष्कपट सदा
करते करूणा सर्व रूप में भक्त व्यवस्थित चित्त सदा
सर्व अनुग्रह कारक स्वामी भक्त आपसे भिन्न नहीं
जो भक्तो का आश्रय लेता उससे स्वामी भिन्न नहीं
कोटि कोटि ब्रह्माण्डों के पति कोटिक अण्ड सृजेता जो
नमस्कार उस प्रभु को जो अविकारी है गुण ग्राहक जो
देव बुद्धि दो सदा व्यवस्थित आत्मानन्द प्रसादित हो
सर्व रूप में सर्व प्रतिष्ठित सर्वेश्वर ही हो भगवन्

कृष्ण कन्हैया आजा मोरे

आजा राजा कृष्ण कन्हैया ठुमुक ठुमुक फिर आजा रे
आजा रसिया रस बरसाजा मन की जलन बुझा जा रे
भरी मथनिया दधि की सारी मोहन खाय लुटा जा रे
फीको पड़ गयो सगरो गोरस आजा रस बरसा जा रे

गागरिया ले बाबरिया सी भटकें वृज की नागरियां
सौतनियाँ सी बैरन बन गईं गोकुल की सूनी गलियां
बंशी की धुन आजा राजा फिर से जरा सुनाजा रे (भरी)

तेरी सों चित चोर साँवरे मन को डस गईं नागिनियां
आँख कान मन कहा न मानें चितत रहें सूनी गलियां
पायलियाँ की छनन् छनन् छन् फिर से जरा सुना जा र (भरी)

छलिया की नटखट बतियन को तरसें बृज की नागरियां
बृज-रज भी अब याती लागे चितत रहें सूनी गलियां
बंशीवट पे आके राजा चीर-हरण कर आजा रे (भरी)

काह भयो नन्दलाल काह तोरी बतियाँ मन भाईं
काहे को चित दयो रास में मन की चैन गवाँई
अब तो पूनम को चन्दा भी तन-मन सब झुल सावेरे (भरी)

राधा-नागर की जोरी पर **कृष्ण दास** बलि जाई
या तन की हर स्वाँस स्वाँस में राजे मूरति प्यारी
अब तो जमुनाजी के द्वारे सगरो जीवन जावे रे (भरी)

बाल कृष्ण के प्रति

सुतहि लड़ावति मात जसोदा त्रिभुवन पति शिशु प्यारे
करति श्रृंगार विविध लाला के वस्त्र अनेक सुहाये
गोरोचन को तिलक भाल अति सुषुमा मुख छबि छाये
कमल दृगन शुचि अन्जन आँजी माथ डढूला पाड़े {1}

कटी करधनी घुँघरूवाली मधुर-मधुर उच्चारे
मृदु पल्लव पद कंज विराजत पैजनियाँ झंकारे
आज लला मुद हास कमल मुख जननी तन मन वारे
स्तन-पान करावति माई चितह दृगन चित चावे {2}

किलकिलात मृदु-वदन हँसत अति दशन-युगल छबि राजे
धावत पुनि-पुनि धाई गहे घुटरून पगध्वनि बाजे
धन्य जसोमति गोद खिलावति कण-कण सो निस्तारे
जिन्ह को नाम लेत दु:ख जाई तिन्हहि पुत्र कर माने {3}

प्रभु दीनबन्धु दयालु जन मन हरण भ्रात सखा पति
श्रुति सेतु शारद विपुल यश गुण गान करि नहि नहि कहा
जो नाथ गोचर गोरहित नहिं काल दिशि गति बाध ही
सोई स्वामी जगकारण परम सुप्रविष्ट जग इव भासई {4}

प्रभु गुणातीत अनन्त निर्मल विमल मन जोगी जती
कोई पाव सब जग तजत जो हरिभजत पद पंकजरति

जो ब्रह्म निर्गुण निर्विकार सुख्यात अग जग नभ मही
सोई सगुण वपु धरि श्याम सुन्दर नन्द गेह भये हरी {5}

जेहि नामि सम्भव पंक रूह संग जनम विरिन्चि विराजई
जो रचहि सृष्टि अनेक विधि रचि सप्रजग शोभा नई
सोई सृष्टि नायक जग जनम धरि भगत हित जस विस्तरहि
जोई गाई गुण शुभ धाम निसि दिन भक्त गति शुभ पावहिं {6}

प्रभु जन कृपा करि रूप सुन्दर शंख चक्र गदा गही
मणि मुकुट कुण्डल प्द्मकर मृदु हास नामि भँवरमई
शुभ शुभ्र दन्तावलि मनोहर अरूण विम्ब बिराजहि
धरि नील पंकज गात सुन्दर पीत पर छबि राजई {7}

सोह नाथ दोह भुजवेष धारी मनुज लीला तनु हरी
जेहि गाई जस भव निधि तरहिं सोई नाथ वृज लीला करी
प्रभु दीनबन्धु कृपालु स्वामी देहु यह वर जगपती
मन वचन कर्म विकार तजि प्रभु पद कमल श्री पतिरती {8}

"श्री लक्ष्मी जी"

हे मात चौदह भुवनवन्दित पाद सरसोरूत शुभे
भक्त उर अम्भोजिनी शशिचन्द्रिके शुभमंगले
वत्सले शुभ वरद हस्ते सर्वजन करूणार्द्रिते
सर्व जग हितकारिणी जगदीश्वरी जगदाम्बिके {1}

माँ सदा अनुकूल सबके सर्वदा शुभकांक्षिणी
दृष्टि अमृत रसभरी करूणार्द्ध-उर शुभकारिणी
कौन वह स्थान माता आपसे जो शून्य है
सर्व कर ग्रह आपके जिमिगन्ध युक्त प्रसून है {2}

योगमाया ब्रह्म की परिपूर्ण शक्ति अनन्त है
आपकी अनुभूति से जो शून्य है जड़खन्ड है
श्रुति पुराणों ने कही करूणामयी जगदम्बिका
अमित अंबुधि पूर्णकर माँ सर्व दु:ख प्रभान्जिका {3}

हस्त पंकज शोभिते कमलासने सरसिज मुखे
पद-सरोरूह असुर-सुर मुनिजन सुसेवित अनुपमे
बंकमित भ्रू दृग मनोहर मन्द हास्य वरानने
कृपा करने को सदा आतुर जननि सुत-वत्सले {4}

सृष्टिक्रम जबसे चलाया जगज्जननि आपने
में भटकता ही रहा तिमिराह पूर अथाह मे

जर्जरित बोहित सिन्धु उद्वेलित अनन्त प्रवाह है
नक्र आदि अनेक भय संयुक्त यह मझधार है {5}

निर्बाध-गति जग-व्यापिनि जगकारिणि भयहारिणी
सर्वव्यापि सुपूर जलनिधि माँ जगत्तम तारिणी
मैं अनाथ न बुद्धि विद्या चित्र विभ्रम पूर है
दया करियो मात मोहि उबारि-जग दुःखभंजिके {6}

आपकी दुष्पार माया का प्रवाह विशाल है
क्षुद्र प्राणी मैं तुम्हारा जगत यह विकराल है
किय विधि है जगनियन्त्री तुष्ट तुमको मैं करू
राग-रन्जित हृदय मेरा द्वेष दूषित चित्त है {7}

आप माता ज्योति रूपा रवि प्रकाशित आपसे
मैं निविड़ तमपूर जगती मैं झुलसता ताप से
अन्धकार प्रकाश का माँ साथ रह सकता नहीं
तिमिर आच्छादित हृदय सुख शान्ति पा सकता नहीं {8}

सुधासिया सुदृष्टि मुझ पर हो सतत आल्हादिनी
मात ममता सिक्त दृग निक्षेप हो अनुरागिणी
कर सरोरूह शीष पर रख दो दयालु हरि-प्रिये
जग-प्रकाशिनि मात अन्ध निवार दो जगदम्बिके {9}

जन्म मृति की गति अबाधित कालदण्ड प्रचण्ड है
अब तेरे पद कमल की शरण ही अवलम्ब है

चरण-धूरि-प्रसाद कृपया दास को दे दो शुभे
चित्त में श्रीकृष्ण रूप प्रसार अम्ब शुचिस्मिते {10}

शुभ-अशुभ का चक्र माता घूमता रहता सदा
और अम्ब भवाटवी में ही घुमाता सर्वदा
कर्म का यह जाल दुरतिक्रम तथा अनिवार्य है
व्यूह में फँसकर निकलना सर्वथा दुस्तार्य है {11}

हृदय मेरा तिमिर आच्छादित नयन भी शून्य है
है प्रभन्जनचन्ड उच्छालित जलधि तन चूर्ण है
कंज कर अपना बढ़ा दो माँ उठालो अंक में
अब विलम्ब असह्य माता छटपटाता पंक में {12}

दया कर दो चरण वारिज की शरण दे दो मुझे
हाथ मस्तक पर वरद हो सर्वदा जनरन्जने
दीन दुखियों पर दया करती रही हो माँ सदा
अब बचा लो भव जलधि में डूबता उतरा रहा {13}

दो कृपा करके सुभाषित हृदय अभिलाषित मुझे
युग्म छबि पद कंज जुग का भ्रमर बन जाऊँ शुभे
मूर्ति वत्सलता भरी मम उर रहे अभिमत प्रदे
रम्य गायन कीर्ति का करता रहुँ जगदम्बिके {14}

कालरूप प्रचन्ड दन्ड प्रदायिनी दुर्जन कृते
आद्य शक्ति समस्त भूत हृदिस्थिते सुरवन्दिते

मातृ भक्त समूह कृत यश गान परिभेषित धिये
भक्तिवर अभिमत मुझे अनुराग नित्य नवीन दे {15}

नाभि-सर संभूत पंकज कृत निलय अज त्रस्त थे
प्रबल मधु-कैटभ भयार्दित खिन्न और विषण्ण थे
पदजलज की शरण माता चर्तुमुख ने ग्रहण की
आपने संताप काटे जगन्मात दयामयी {16}

मात महिषासुर विमर्दिनी नमन मेरा चरण में
सृष्टि के आदिमचरण से मैं भटकता भ्रमण में
दोष दोषण रूप ईंधन नाम अग्नि प्रचन्ड है
मृदुल कर पल्लव बढ़ा दो मातृशक्ति अनन्त है {17}

आपको परितुष्ट करने मखविधी श्रुति सम्मता
कीर्तिगायन वाद्यनृत्य अनेक विधि सम्पादिता
किन्तु माता भक्तिहीन समस्त विधि मृगतृष्णिका
भक्तिपूरित हृदय भक्त प्रदत्त वारि फलप्रदा {18}

भक्ति रस संचार करती हृदय प्रांगण उद्भवा
नित्य नूतन भाव भूषित सुरसरी जल र्निमला
मल सकल कलि दोष दूषण हों तिरोहित धार में
मान का अभिशाप छूटे चरण-धूरि प्रसाद में {19}

काल घोर कुठार कर में साध कर सम्मुख खड़ा
विषय विष की अग्नि से सन्तप्त हूँ जगदम्बिका

चण्ड मुण्ड विनाशिनी अमरारिवन दावाग्नि हे
भक्त गण मुददायिनी कर चरण युग्म नमामिते {20}

भ्रम भवाब्धि विशाल तुंग-तरंग युक्त प्रचण्ड है
कलि कलुष संविद्ध-कर तम पूर्ण चित्त विषण्ड है
मैं असूया दम्भ छल परदार विप्त विमूढ़ हूँ
पुर्व कृत बहु कर्म बन्धन युक्त दुष्कृति पूर्ण हूँ {21}

कर-कमल अपना बढ़ाकर दीन की आरत हरो
मातृ ममता से भरी शुभ दृष्टि मुझ पर डाल दो
दृग-सरस-पीयूष-रस-पूरित विमल मुझको करें
कृष्ण भक्ति तरंगिणी चरणोदका पावन करें {22}

कालरात्रि महान्ध्कार विभूषिते भय दायिनी
मोह रात्रि प्रचण्ड माया जवनिका संछादिनी
मात रूप अनेक तेरे जगज्जाल विलासिनी
सर्व-शुभ मंगल-प्रदा हो अम्बिका वरदायिनी {23}

आपका मुख-विम्ब-चन्द्र-लगाम ज्योत्स्नाप्रद रहे
नयन अंचल की सुशीतल छाँह में रख लो मुझे
सौम्य रूप सदैव माता ताप तम उर के हरे {24}
कर चरण युग कंज भव बाधा-हरण मम उर रहे
आपकी अनुभूति संतत सर्व मातृ समाज में

आपके मुख कंज की शोभा अमित फलदायिनी
सर्व नारी वृन्द में देखूँ सतत वरदायिनी {25}

अम्ब इस कलिकाल में मन मलिन दुष्ट विरूप है
अन्य जन के दोष दर्शन में ललित बहुरूप है
दृष्टि कुत्सित कर्म तत्पर सर्वदा दुष्कारिणी
चित्त जगजन्जाल भ्रम भूषित विदूषण धारिणी {26}

मैं स्वयम् को सर्वदा अभिमान के अभिशाप से
सुक्त चेतन को सजाकर जल रहा परिताप से
आपकी आल्हादिनी शुभ दृष्टि मुझ पर डाल दो
युगल लोचन चन्द्रिका का छाँह में विश्राम दो {27}

दुष्ट दल कृत चण्ड ताप विदारिणी जनरन्जनी
सर्व दल ईंधन कृते ज्वलिताग्नि गर्व प्रभंजिनी
पाद सरसिज शरण कृत निज भक्त जन परिपालिनी
मुख मयंक सदैव शीतल चन्द्रिका सुखदायिनी {28}

जगद्भ्रम संस्थापिके उद्भव करी जगपालिनी
सर्व चेतन शक्ति रूपे अधिष्ठिान प्रदायिनी
सकलजग की नारियों में आपकी छबि विस्तृता
हो विभासित हृदय पल्लव में सुभग मुखचन्द्रिका {29}

आप कारण-भूत जग की सर्व क्षेम विधायिनी
आप कल्पान्तक प्रलय कारिणी क्रिया संहारिणी

आप क्षीरोदक निवासी विष्णु अंक विलासिनी
पूर्ण ब्रह्म-परात्म सर्वेश्वर प्रिया अर्धांगिनी {30}

ईश्वरी बैकुण्ठधाम विहारिणी शुभ कीर्तने
हे दया की मूर्ति विशम्भरप्रिये शुभ दर्शने
आपका चिन्तन समस्त वैभव कीर्तिदा
आपकी पद वन्दना सकलार्थ सिद्धि प्रदायिका {31}

आप ममता से भरी माता सुहृद जगदम्बिके
युगल बाहु प्रसार द्वारा शरण दो सुतवत्सले
हे जननि निज पाद पल्लव का विभव दे दो मुझे
मधुर कर जलजात मस्तक पर युगल रख दो शुभे {32}

मात कहने बहुत है किन्तु कोरी कल्पना
सर्व उर मन्दिर तुम्हारे सर्वदा अन्तार्मना
दोष यद्यपि विपुल मुझ में किन्तु दोष विदाहिनी
अब कृपा करके चरण सेवक बना लो मानिनी {33}

नमन मेरा युग्म कर पद कंज को शत कोटिशः
नमन मुख मन्डल प्रभा सन्दीप्त सुस्मित पंकजा
नमन युग लोचन मनोहर कृपा भाव विभूषिते
दन्त मुक्तावलि सुभग मृदुहास्य युक्त नमामिते {34}

श्रीनिवास दयालु के पादाब्ज की अनपायिनी
भक्ति संचारित सतत हो राग द्वेष विदाहिनी

शक्ति रूपिणि माँ हृदय में शक्ति दो संग्रामिणी
दास कृष्ण विभोर पद-सेवा करे अनुरागिणी {35}

मात दूजा वर मुझे दो अमित मंगल दायिनी
श्वाँस के अन्तिम चरण में सर्वजन परिपालिनी
भक्त वत्सलता प्रपूरित दृष्टि युक्त मुख प्रभा
चित्त में अनुराग संपूरित विभासित हो शुभा {36}

राधा माता

सर्व सुखी मुद मंगलदायी राधा के गुण गाती है
भव की बाधा हरने वाली प्रेम सुधा बरसाती है
रूप युगल चरणों का मन की डोर खींचता जाता है
प्राणनाथ संग प्रिया विराजें अनुपम रूप सुहाता है

जगजननी जगन्नाथ प्रभु के दर्शन का सुख सतत मिले
कुन्जबिहारी श्यामा सजनी मन मन्दिर में सदा रहें
सदा प्रवाहित हो जीवन में अनुपमेय गुण कीर्ति सुधा
जिससे नर जीवन सुख पावे कट जाती है कर्म व्यथा

जीवन धन बन जाओ स्वामी कृपा करो हे माँ राधा
नाथ हृदय सिंहासन जन का स्वीकारो काटो बाध्रा
रहूँ सदा उन्नत्त प्रेम में भक्ति रसामृत पान करूँ
सहज सरस बन जाए जीवन युगल कीर्ति का गान करूँ

कर्म करूँ जो जग के स्वामी सदा तुम्हारा ध्यान रहे
जीवन वीणा की झंकृति में सदा नाम की तान रहे
करूँ सदा श्रंगार प्रभु का युगल मूर्ति मन मन्दिर में
कृंपा करो प्रभु कृष्णदास पे वास करो उर मन्दिर में

ऐसा वर दो जीवनदाता सदा तुम्हारा यश गाऊँ
ऐसी सम्मति दो जग स्वामी कर्म वचन मन से ध्याऊँ

माया तेरी मुझको स्वामी जाल फैक ललचाती है
लोभ मोह के दाने डाले प्रभु का ध्यान छुड़ाती है
दया करो है जग को स्वामी सदा नाम का सम्बल दो
निर्मल मन दे दो अविकारी प्रेम प्रवाहित अविरल हो
तुमसे सृष्टि बनी यह सारी तुम रक्षक हो अविनाशी
स्वामी और सखा हितकारी सर्व सुहृद निर्मल यश हो
रूप मोहिनी कृपाधाम की मेरे मन मन्दिर में हो
पान करूँ मैं सदा मत्त सा रहूँ ध्यान भी निर्मल हो
राधा माता जो जगजननी जगबन्धा प्रभु अनुरूपा
दयामयी जगतारण हारी रूप राशि है सुख रूपा
माता के संग हृदय देश में वास करो हे जग स्वामी
कृष्णदास के जीवन धन प्रभु दया सिन्धु अर्न्तयामी

हे माँ दो निर्मल मति मुझको नित्य नया अनुराग सिखा दो
जीवन अमृतमय कर दो माँ जननि तुम्हारा रूप दिखा दो ।।टेक।।

दयामयी तुम सबकी माता जगत्बन्ध जगधात्री हो
करूणा की प्रति छबि माता तुम द्रवित हृदय मन भाविनी हो
वरदायिनी हे सर्व स्वरूपे मुझ पर भी करूणा बरसा दो
जीवन का जागृत कर दो माँ सुप्त हृदय में भाव जगा दा

मन को स्पन्दित कर दो माँ जगन्मयी तुमको देखूँ मैं
नारी जगत में मातृ स्वारूपा जगज्जननि की छबि देखूँ मैं (हे०मा०)

अर्धस्वरूपा कल्याणी तुम अर्ध रूप में जगसृष्टा
सदा सुमंगल सर्व स्वरूपा नारायण की माया हो
जगत्स्वरूपे माता जग की मातृभक्ति का पाठ पढ़ा दो
जगदम्बा का जगमय देखूँ दोषदृष्टि को दूर हटा दो
विश्वमयी वात्सल्यमयी माँ वरद हस्त मस्तक पर रख दो
नारी जगत में प्रति विम्बित छबि आत्ममयी अपनी दिखला दो (हे०मा०)

मोहिनी माता जगकारिणी विश्वरूप की माया हो
शरवाणी तुम मदन् दहन के हृदय कमल की आभा हो
तपोमूर्ति आदर्श स्वरूपा तुम ही सीता माता हो
मनमोहन की मधुर मोहिनी बरसाने की राधा हो
मोहिनी रूप छुपा लो माता असुर भाव को सदा मिटा दो
नारी जगत में मातृजगत का मातृभाव का पाठ पढ़ा दो (हे०मा०)

नारायणि भव भय हारिणि वरदायिनि जगदम्बा हो
रूद्राणी हो चण्डी रूपा काल कला शत रूपा हो
रूप अनेक तुम्हारे माता यथा भाव मन रूपा हो
सौम्य भाव भरदो माँ मन में सौम्य रूप जगरूपा हो
वात्सल्य भाव दिखला दो माता रहो सदा आनन्द प्रदा
विष्णुस्वरूपे पालिनिबन कर मौद मुदित हो रहो सदा

सदा रहे अभिभूत हृदय माँ तेरी ही छबि मन में
रूप सदा तेरा जगवन्दित ध्यान सदा चरणों में हो
माता दे वरदान जगत में मातृ में स्वरूपा तू ही हो
सर्व रूप में तुझको देखूँ नारी तेरी प्रति छबि हो
वीणावादिनी दुःख निवारिणि मन मन्दिर को निर्मल कर दे
आत्म स्वरूपे सर्व स्वरूपे वीणा के स्वर झंकृत कर दे
मधुर रागिनी वीणा स्वर की सदा तरंगित हो मन में
जीवन जब तक शेष रहे तू हो मन में जनजीवन में
हे माँ दो निर्मल मति मुझको नित्य नया अनुराग सिखा दो
जीवन अमृतमय कर दो माँ जननि तुम्हारा रूप दिखा दो

आस है दर्शन की

पुन्ज है प्रकाश को हिरदय में बास जाको
नाम के प्रताप जाके भागी अन्धियारी है
जगती बनावे जो सँवारे है जीवन को
जासे सब सृष्टि भई दीन को सहाई है
बाकी जो भामा जगमाता जो क्रिया शक्ति
माया जो ब्रह्म की अनन्त प्रभुताई है
वाही श्री राधा जो त्राण करे संकट से
नाम को सहारो जाको अमृतनिधि दायी है
अंश हैं ईश्वर के जगती के जीव सभी
स्थावर और जंगम कण-कण में समायो है
ईश्वर को भजन करे वाही को भाव रखे
ईश्वर सम्य विश्व देख साधक हरषायो है
मूरति को पूजो स्तुति सम्मान करे
हियँ में श्री-पाद-युगल झाँकी सजायो है
ऐसे शुभ शांतचित्त भाग से मिलें जो सन्त
कृष्ण को माथ पग धूरि में सुहायो है
रूप नहीं जाको सरूपन में सुहावे भावे
जाके नहिं पाद कर असंख्य पाद धारी है
कोई कहे यामें है कोई कहे वामें नाथ
यामें और वामें सृष्टि जामें बिराजी है

जब जब हे टेर पारी भीति श्रुति मारग पे
जाको नाहिं रूप रंग अवतारी है
धरती जब त्रसित भई दुष्टन्त अति बाढ़ बाढ़ी
जसुमति को लाल राजा प्रगटो बनवारी है
सावँरो सलोनो बनवारी मोहे प्यारो लागे
ठुमुक ठुमुक नाचे बलिहारी छबि बाँके की
आस है दर्शन की भोली सी चितवन की
रोम-रोम बसे छबी मोहन मन भाये की
तन्नक से माखन हित करूणानिधि चौर बने
लक्ष्मी जेहि दासी हृदय में समाय की
वृष्ण है दास आस मोर मुकुट मुरलीधर
चितवन की झाँकी बलिहारी लाल प्यारे का
श्यामा श्याम राजे संग दामिनी घन में ज्यों
श्यामा की वेणी श्याम हाथन्ह सजाई है
सिंहासन रतनजटित श्यामा सुख साज रही
श्यामजू अगर धूप भवन में लगाई है
श्यामा की आभा श्यामजू की निराली छबी
मोहिनी और मोहन की जोरी रंग लाई है
वृष्ण के नाथ साथ श्यामा के बसो श्याम
तुम्हारे बिन मिथ्या जग-जीवन मिताई है

श्याम श्याम राजे राज-राजन के राजे
जग के सहारे रूप माधुरी सुहाई है
श्याम की छटा जैसे नील मेघ अम्बर पे
बिजुरी सी राधा मोहन संग भाई है
श्यामा की आभा श्यामजू की निराली छबी
मोहिनी और मोहन की जोरी रंग लाई है
कृष्ण के नाथ साथ श्यामा के बसो हृदय
ध्यान में बिराजो नाथ प्रीति जो बढ़ाई है

अँखियां है कमल जैसी छबी है अनंग जैसी
कीरति पतंग जैसी रंग घनश्याम है
चाल है गयन्द जैसी वाणी है वीणा जैसी
पीताम्बर की शोभा मनभावती ललाम है
कृष्ण को ठाकुर यही जसुदा को लाल बन्यो
जग को सहारो जाको लाखों परनाम हैं

दीनन को नाथ अग-जग में समाय रह्यो
कण-कण को बासी शक्ति जाकी निराली है
ब्रह्म है अनन्त अनुभूति में दिखाई देत
सृष्टि को स्वामी सारी सृष्टि जेही प्यारी है
भक्त को सहारो अभक्तन को भी नाथ प्रभु
नाम को सहारो जाको निर्मल गतिकारी है

राग को मिटावे भव सिन्धु से उबारे
हृदय काम की अगिनि बुझे नाम सुखदाई है
आवुःल पुकारे जगती को पालनहार
दौरि के छुरावे फन्दजनम सुधारी है
गणिका अजामिल गीध गज की हरी है पीर
नाम की महिमा सर्व-मृत्यु भय टारी है
वृःष्ण को नाथ यदुनन्दन दयालू प्रभु
चेतरे मूरख मन नाम भय हारी है
जगती की नाव जबहिं पाप के भँवर में फँसी
निर्गुण सो सगुण भयो भक्त भयहारी है
धरम को उबारे दुष्टन्ह संहार करि
मूरति बसाई चित्त हृदय हरषाई है
दीन को सहारो जग-कारण दयालू नाथ
अधम को उधारे जाको नाम सुखदाई है
नाम रस सिन्धु भक्त लहराई गाई
कीरति ललाम जाकी जनम सुहाई है
आओ वृजराज बात हमारी सुनो जू राज
रूप की झाँकी सलौनी दरसाओ जू
हे करतार जगपालन हार साँवरिया
गोकुल की गैयन के चरैया बन आओ जू

वृज के आवाल बृद्ध और सुहृद गोपीजन
बिरही मलीन आतुर अबतो सुधि लीओ जू
ऐसी कहा निठुराई धारी है दयानिधी
नैनन श्वाँसन में हियें बस जाओ जू

छटा है निराली श्याम सुन्दर की सखीरी आज
नन्द के भवन गई प्रीति बढ़ी भारी है
जगती को पालनहार ब्रह्म जो अनन्त नाथ
बालक रूप धारि नाचे बनवारी है
बिसरो सखि घर द्वार भूली है देह सुधि
भोली मुसुक्यानि प्यारी करे जे समाई है
वृष्ण को नाथ वृजनन्दन कन्हाई आय
बसो री अखियन में काज न सुहाई है

फागुन की रंगीली ऋतु सगरो वृज रंग रंग्यो
वृन्दावन की कुन्जन बसंत लहराई है
कैतकी गुलाब फूले अंबुइन के गुन्ज झूले
बैरी पपीहा बोले सुगन्ध बरसाई है
एरी सुन भोरी भटू होरी को समैया भावे
प्रीति की प्रतीति बाढ़ी कीन्ही मतवारी है
ऐसो मन आवे याही मिस सखी री आज
ललन को लगाऊँ कण्ठ जनम सुहाई है

